सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

‘सरदार पटेल एकीकरण के शिल्पी’

राष्ट्रीय एकता दिवस

31 अक्टूबर 2022 के अवसर पर

प्रदर्शनी

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सरदार पटेल
एकीकरण के शिल्पी

भारत पर विदेशियों ने आक्रमण और शासन किया, जिन्होंने धर्म, क्षेत्र, भाषा, जाति, पंथ और संस्कृति के नाम पर विभाजित करने का प्रयास किया। अपनी एकजुट पहचान बनाए रखने के लिए भारत का संघर्ष अभूतपूर्व रहा है। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने औपनिवेशिक साम्राज्यवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई के दौरान एकता के महत्व को महसूस किया और जनता को एकता की ताकत के बारे में बताने के लिए कड़ी मेहनत की। इस भूमि पर पैदा होने के कारण, हम सभी को अपनी संस्कृति की प्राचीन जड़ों को याद रखना चाहिए और उसे संजोना चाहिए, जो कहती है, "एकोहम बहुस्याम" जिसका अर्थ है कि मैं बहुतों के माध्यम से व्यक्त हूं।

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर, सरदार वल्लभभाई पटेल के महत्वपूर्ण योगदान को याद करना हमारा कर्तव्य है। वे एकीकरण के शिल्पी, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई, एक संयुक्त, स्वतंत्र राष्ट्र में इसके एकीकरण का मार्गदर्शन किया। बहुतों का विचार था कि भारत जैसा विविधतापूर्ण देश कभी एक नहीं रह सकता और यह बिखर जाएगा। सरदार वल्लभभाई पटेल ने रास्ता दिखाया कि भारत कैसे मजबूत और एकजुट रहेगा। हमें भारत के नागरिक के रूप में सीखना चाहिए कि कैसे लगातार ताकतवर बनना है और एकजुट रहना है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 15 अगस्त 2022 को लाल किले पर अपने भाषण में "पंच प्रण" के रूप में एकता और अखंडता की ताकत के बारे में भी उल्लेख किया था। अमृत काल के पहले वर्ष में, 31 अक्टूबर को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जा रहा है, ताकि एकता और अखंडता के प्रण को याद किया जा सके और इसके लिए व्रत लिया जा सके।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

परिचय

स्वतंत्रता से पहले भारत को दो प्रकार के क्षेत्रों में विभाजित किया गया था: ब्रिटिश भारत के प्रांत - सीधे अंग्रेजी शासन के अधीन और रियासतें - जिन्होंने स्थानीय स्वायत्तता के बदले ब्रिटिश आधिपत्य को स्वीकार किया हुआ था। भौगोलिक निकटता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए राज्य अपनी इच्छा से, जिस भी डोमिनियन में चाहें जा सकते थे अथवा स्वतंत्र रह सकते थे। समस्या बहुत गंभीर लग रही थी, लेकिन जैसा कि लॉर्ड माउंटबेटन ने 15 अगस्त 1947 को भारतीय संविधान सभा में अपने संबोधन में कहा था: "इसका समाधान 'दूरदर्शी राजनेता' सरदार वल्लभभाई पटेल ने सफलतापूर्वक किया।" 5 जुलाई 1947 को 565 रियासतों के राजनीतिक एकीकरण के उद्देश्य से, जिसमें 2/5 क्षेत्र शामिल थे, एक राज्यों का अलग मंत्रालय का गठन किया गया, जिसका प्रभार राज्यमंत्री के तौर पर सरदार वल्लभभाई पटेल को दिया गया। बाद में उन्होंने स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री के रूप में पदभार ग्रहण किया।

1947 और 1950 के बीच, तीन रियासतों - हैदराबाद, कश्मीर और जूनागढ़ ने विलय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए और उनके क्षेत्रों को राजनीतिक रूप से भारतीय संघ में एकीकृत किया गया। अन्य जो मौजूदा प्रांतों में विलय हो गए थे, उन्हें नए प्रांतों में संगठित किया गया था, जैसे कि राजपूताना, हिमाचल प्रदेश, मध्य भारत और विंध्य प्रदेश।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सरदार वल्लभभाई पटेल

31 अक्टूबर 1875-15 दिसंबर 1950

एक संक्षिप्त जीवनी

31 अक्टूबर 1875 को गुजरात में खेड़ा जिले के करमसाद में जन्मे वल्लभभाई पटेल ने करमसाद, पेटलाड और नडियाद से स्कूली शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने 1900 में जिला प्लीडर की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1902 तक बोरसाड में एक सफल फौजदारी वकील बन गए। 1913 में लंदन से वे बैरिस्टर की डिग्री प्राप्त कर लौटे और अहमदाबाद चले गए और खुद को एक अग्रणी फौजदारी वकील के तौर पर स्थापित किया।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सरदार वल्लभभाई पटेल

31 अक्टूबर 1875-15 दिसंबर 1950

एक संक्षिप्त जीवनी

उनकी राजनीतिक यात्रा 1915 में गुजरात सभा का सदस्य बनकर शुरू हुई, जो बाद में 1919 में गुजरात प्रांतीय समिति में बदल गई। गुजरात प्रांतीय सम्मेलन के अध्यक्ष होने के नाते, महात्मा गांधी ने वल्लभभाई पटेल को 1917 में अपनी कार्यकारी समिति के सचिव के रूप में नियुक्त किया। तब से वल्लभभाई पटेल गांधीजी के साथ उनके सभी आंदोलनों और सामाजिक कार्यों में साथ रहे। उन्होंने 1918 में अहमदाबाद मिल एवं खेड़ा किसान आन्दोलनों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। वे 1924 में अहमदाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष चुने गए। 1928 में बारदोली सत्याग्रह के नेता के रूप में, पटेल के दृढ़निश्चय ने क्रूर और अत्याचारी ब्रिटिश अधिकारियों को घुटनों पर ला दिया। इस आंदोलन में पटेल के दृढ़निश्चय और सफलता के कारण बारडोली के किसानों ने उन्हें 'सरदार' की उपाधि दी। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अलग-अलग अवसरों पर 9 साल से अधिक समय जेल में बिताया।

1947 से 1950 के बीच में जब भारत ने विभाजन के बाद स्वतंत्रता और लोकतंत्र की ओर कदम बढ़ाया, तब बड़े पैमाने पर उथल-पुथल हो रही थी, उस समय उप प्रधान मंत्री और गृह मंत्री के रूप में सरदार वल्लभभाई पटेल ने अपने कौशल से इन सभी परेशानियों को दूर किया। जैसा कि उन्होंने स्वतंत्रता की प्रथम वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर अपने भाषण में कहा था, 'स्वतंत्र भारत में विभाजित वफादारी के लिए कोई जगह नहीं है', उनके दृढ़संकल्प ने 565 रियासतों को भारतीय संघ में सम्मिलित किया और उन्हें नए प्रशासनिक ढांचे में पुनर्गठित किया।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

करमसाद गाँव का स्कूल, जहाँ सरदार पटेल ने अपना पहला पाठ पढ़ा

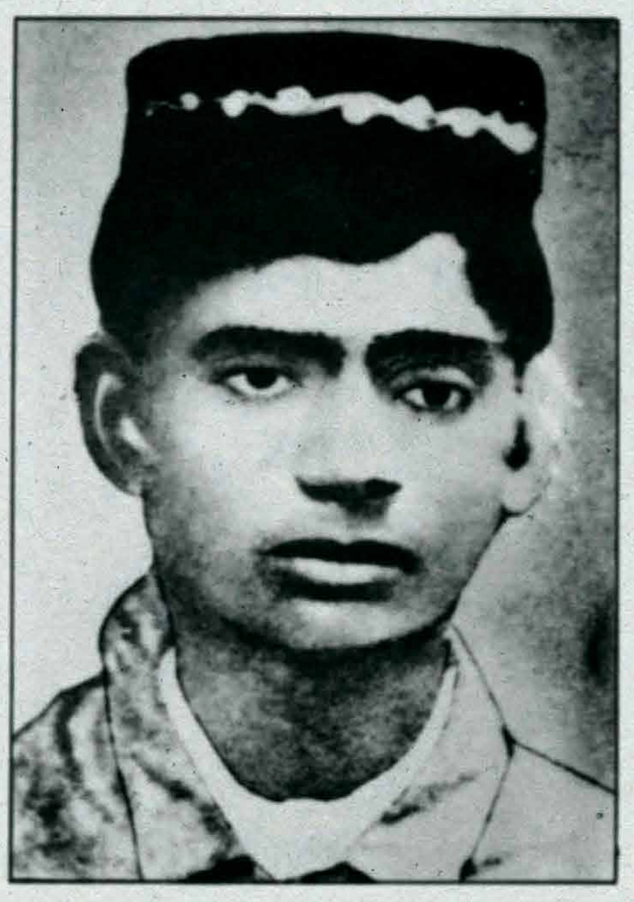

वल्लभभाई पटेल एक छात्र के रूप में

'बैरिस्टर ऑफ लॉ' के अध्ययन के लिए लंदन प्रस्थान के समय, 1910

पटेल जिला अधिवक्ता के रूप में

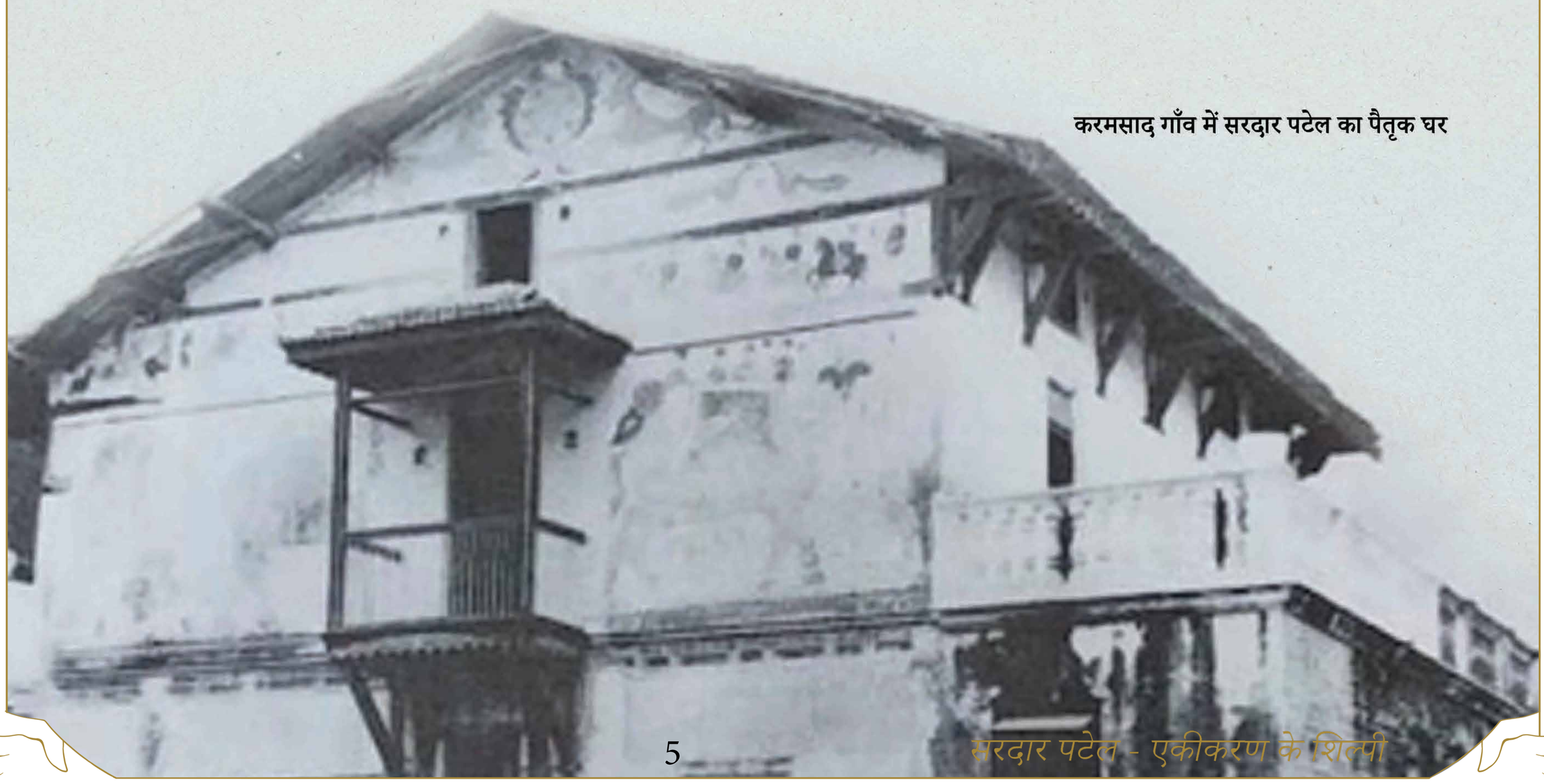

करमसाद गाँव में सरदार पटेल का पैतृक घर

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दो बैरिस्टर भाई: विट्ठलभाई पटेल और वल्लभभाई पटेल लंदन से वापसी पर, 1913

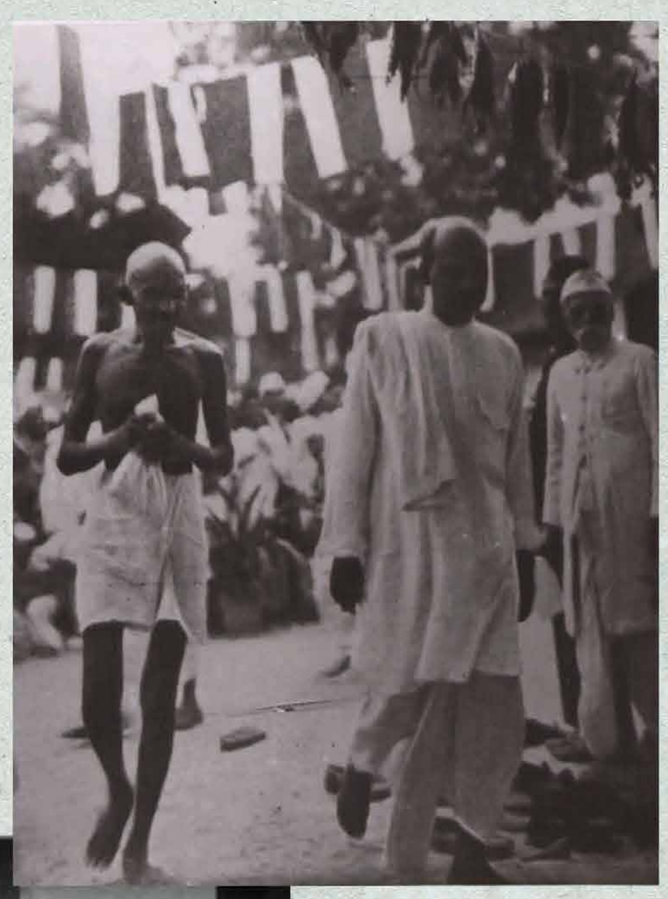

अहमदाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष के रूप में गांधीजी को एक नागरिक अभिनंदन समारोह में ले जाते हुए पटेल, 1925

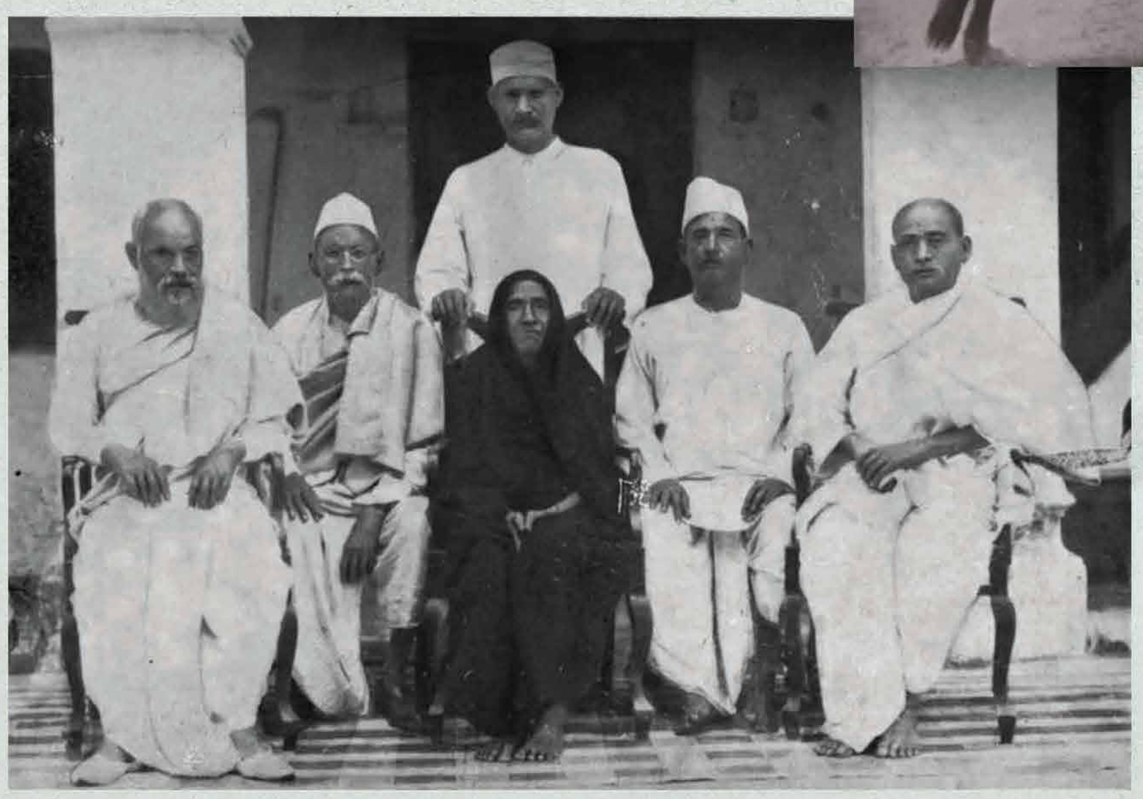

सरदार पटेल की माताजी, श्रीमती लाडबा अपने पांच पुत्रों के साथ: विट्ठलभाई, सोमाभाई, काशीभाई, नरसिंह और वल्लभभाई,1927

पटेल अपने परिवार के सदस्यों के साथ, 31 अक्टूबर 1948

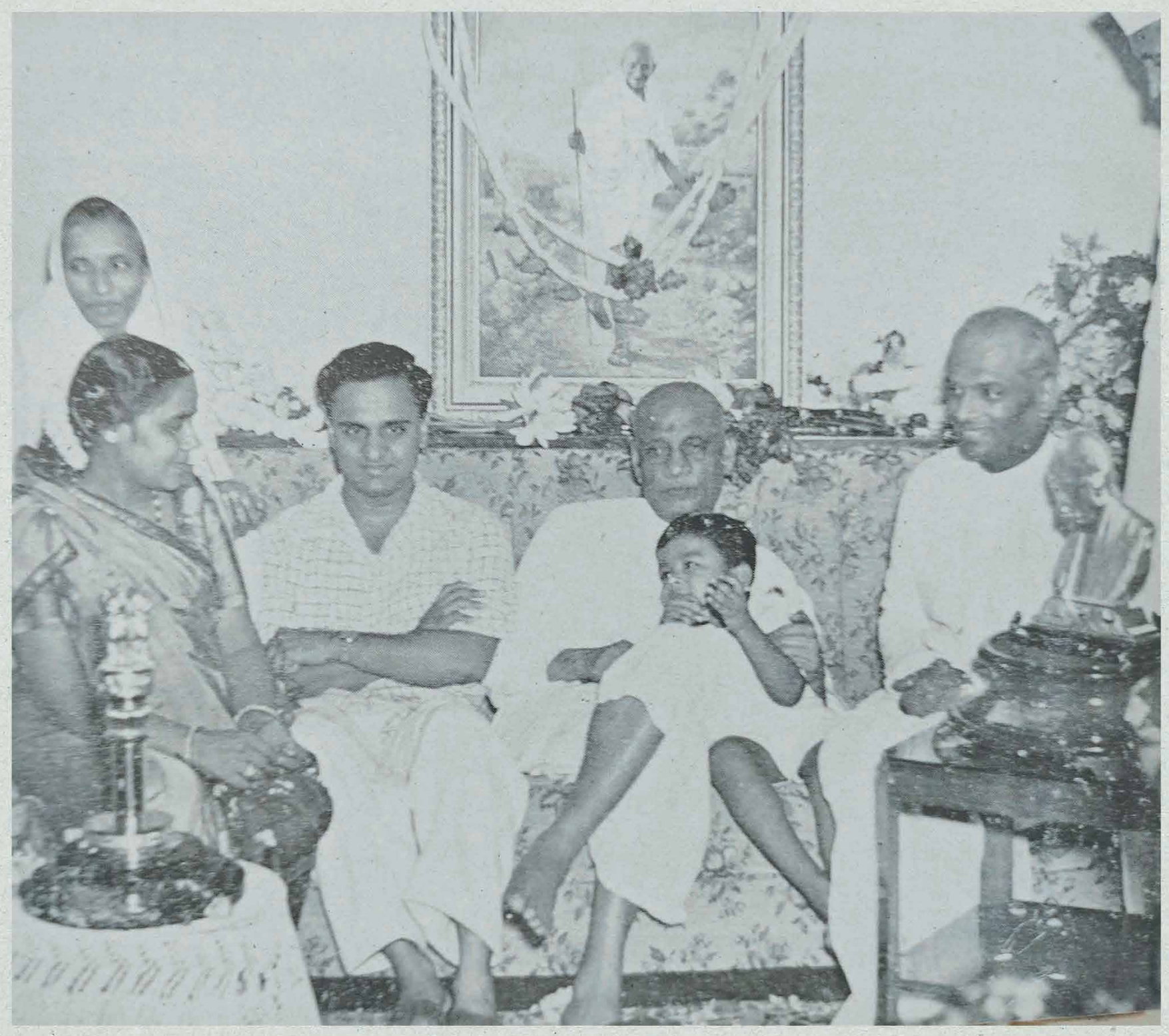

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

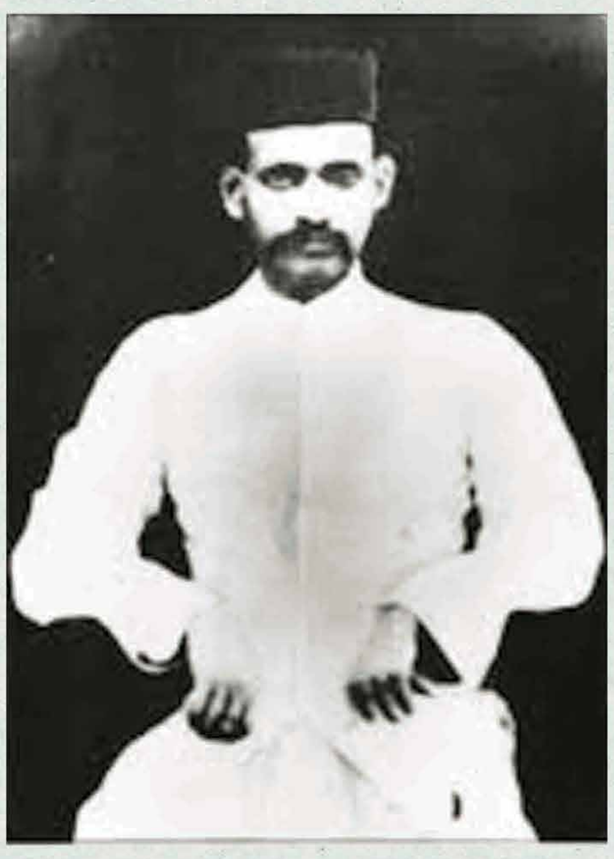

खेड़ा आन्दोलन के समय, 1918

बोरसाड सत्याग्रह के समय, 1923

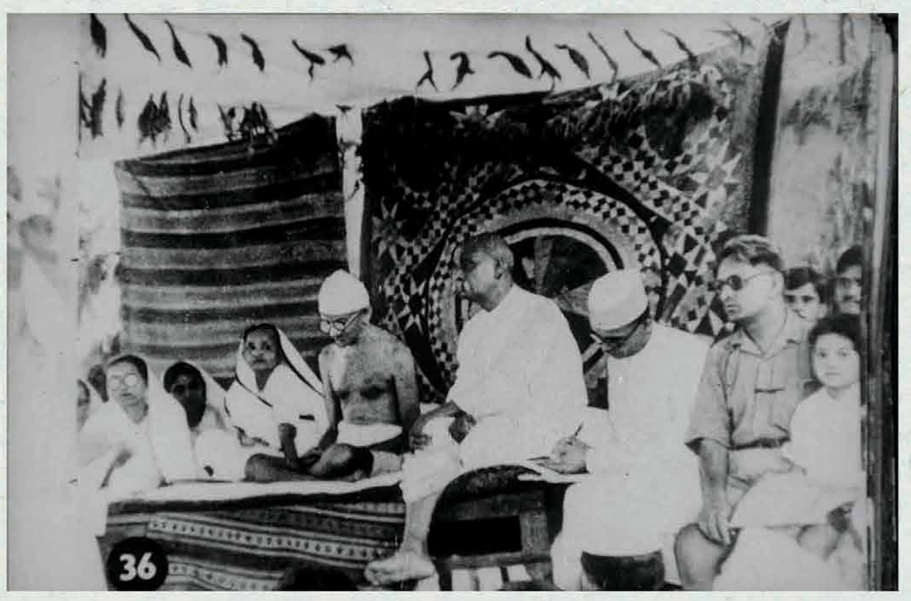

बारदोली सत्याग्रह के दौरान गांधी जी के साथ सरदार पटेल, 1928

खेड़ा सत्याग्रह में सरदार वल्लभभाई पटेल अपने सहयोगियों श्री हरिप्रसाद, श्री जीवन लाल दीवान, श्री इंदुलाल याज्ञनिक, श्री गणेश मावलंकर, श्री मोहनलाल पंड्या और अन्य के साथ, 1918

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बारदोली सत्याग्रह की जीत के उपलक्ष्य में अहमदाबाद में एक उल्लसित जुलूस में पटेल, 1928

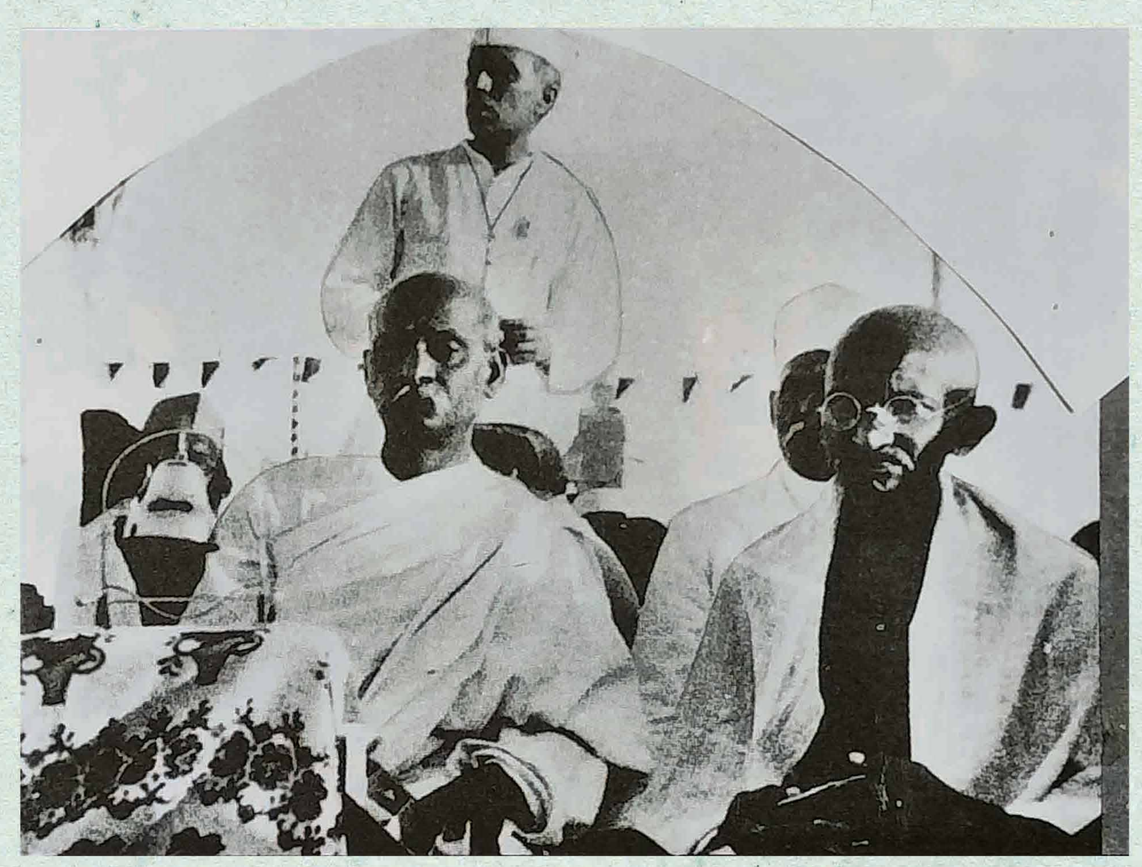

कराची कांग्रेस अधिवेशन, 1931 के अध्यक्ष के रूप में सरदार पटेल

1935 के प्लेग के दौरान गांधीजी के साथ बोरसाड का दौरा करते सरदार पटेल

सरदार पटेल, आजाद, नेहरू, शंकर राव देव, कृपलानी, राजेंद्र प्रसाद के साथ जेल से बाहर निकलते हुए, 16 जून 1945

स्वतंत्रता की पहली वर्षगांठ पर सरदार पटेल का भाषण, द स्टेट्समैन, 15.08.1948

NO ROOM FOR DIVIDED LOYALTY IN INDIA
—SARDAR PATEL

शिमला सम्मेलन के दौरान गांधी जी के साथ गंभीर चर्चा, 1945

सरदार पटेल, जॉन मथाई और जयराम दास दौलतराम के साथ संविधान पर हस्ताक्षर करते हुए, 26 जनवरी 1950

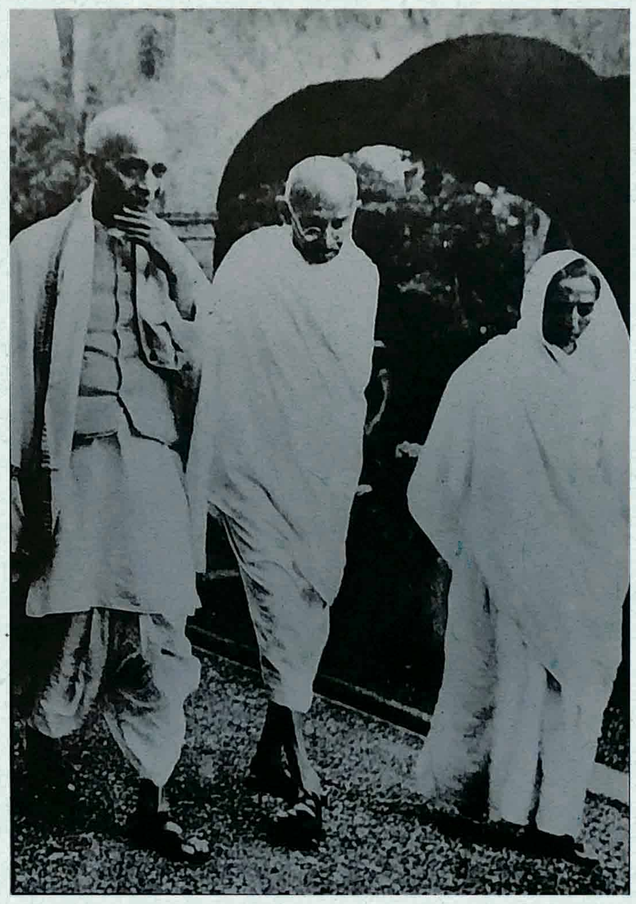

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राज्यों का विलय, एकीकरण और पुनर्गठन

सरदार द्वारा राज्यों के शासकों से कुशल व्यवहार, विलय नीति की सफलता में सबसे महत्वपूर्ण कारक था। रियासती शासकों ने शीघ्र ही उन्हें भारतीय राजनीति में एक स्थिर शक्ति के रूप में पहचाना और उन्हें एक उचित स्थान देने वाले के रूप में जाना। इसके अतिरिक्त, उनकी अटूट विनम्रता ने शासकों को ऐसा विश्वास दिलाया कि सभी ने उनकी सलाह को बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार कर लिया।

वी. पी. मेनन

राजेंद्र प्रसाद, जगजीवन राम, सरदार पटेल अंतरिम सरकार के शपथ ग्रहण समारोह के लिए वायसरेगल लॉज जाने से पहले शुभ नारियल ग्रहण करते हुए, 2 सितंबर 1946.

गृह मंत्रालय में कार्य में व्यस्त सरदार पटेल, 1947

25 जुलाई 1947 को भारत या पाकिस्तान में से किसी एक अधिराज्य में शामिल होने के लिए द चेंबर ऑफ प्रिंसेस को संबोधित करते हुए माउंटबेटन

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सरदार पटेल शरणार्थी समस्या पर चर्चा के लिए बुलाई गयी बैठक में राज्यों और प्रांतों के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए: बाएं से दाएं: अलवर, भरतपुर और पटियाला के महाराजा, सरदार पटेल, वी.पी. मेनन, यूपी के प्रधान जीबी पंत, प्रीमियर भार्गव और पूर्वी पंजाब के मंत्री स्वर्ण सिंह।

सौराष्ट्र / काठियावाड़

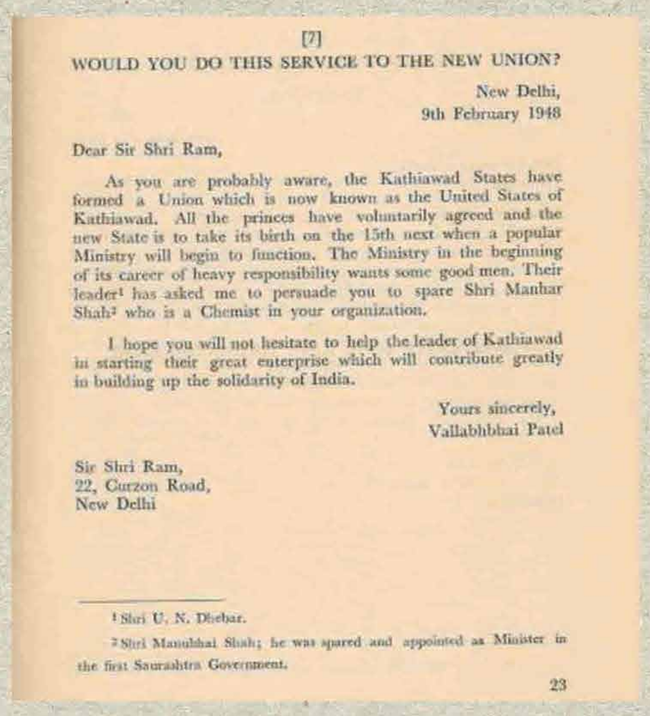

[7]

WOULD YOU DO THIS SERVICE TO THE NEW UNION?

New Delhi,
9th February 1948

Dear Sir Shri Ram,

As you are probably aware, the Kathiawad States have formed a Union which is now known as the United States of Kathiawad. All the princes have voluntarily agreed and the new State is to take its birth on the 15th next when a popular Ministry will begin to function. The Ministry in the beginning of its career of heavy responsibility wants some good men. Their leader[1] has asked me to persuade you to spare Shri Manhar Shah[2] who is a Chemist in your organization.

I hope you will not hesitate to help the leader of Kathiawad in starting their great enterprise which will contribute greatly in building up the solidarity of India.

Yours sincerely,
Vallabhbhai Patel

Sir Shri Ram,
22, Curzon Road,
New Delhi

[1] Shri U. N. Dhebar.

[2] Shri Manubhai Shah; he was spared and appointed as Minister in the first Saurashtra Government.

23

सरदार पटेल का पत्र लाला श्री राम के नाम, 9 फरवरी 1948

सौराष्ट्र का एकीकरणः महात्मा और सरदार का सपना पूरा हुआ; सौराष्ट्र संघ विधानसभा, 1948 में सरदार का स्वागत, चित्र में पुष्पाबेन मेहता, अध्यक्ष (सामने), एन.वी. गाडगिल और जामसाहेब सरदार पटेल के पीछे।

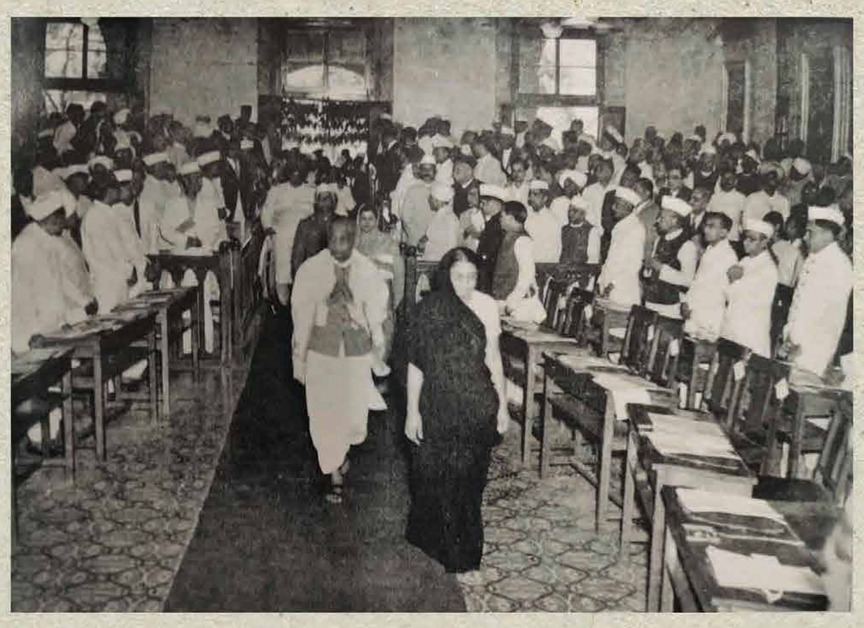

15 फरवरी 1948 को सरदार पटेल जामनगर नवानगर के जामसाहेब को नए सौराष्ट्र राज्य के राजप्रमुख के रूप में पद की शपथ दिलाते हुए

सौराष्ट्र के राजप्रमुख और नवानगर के जाम साहब को प्रधान पद की शपथ दिलाते यू.एन. ढेबर तथा बाईं ओर बैठे सरदार।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जाम साहेब के साथ राज्य भ्रमण पर पटेल

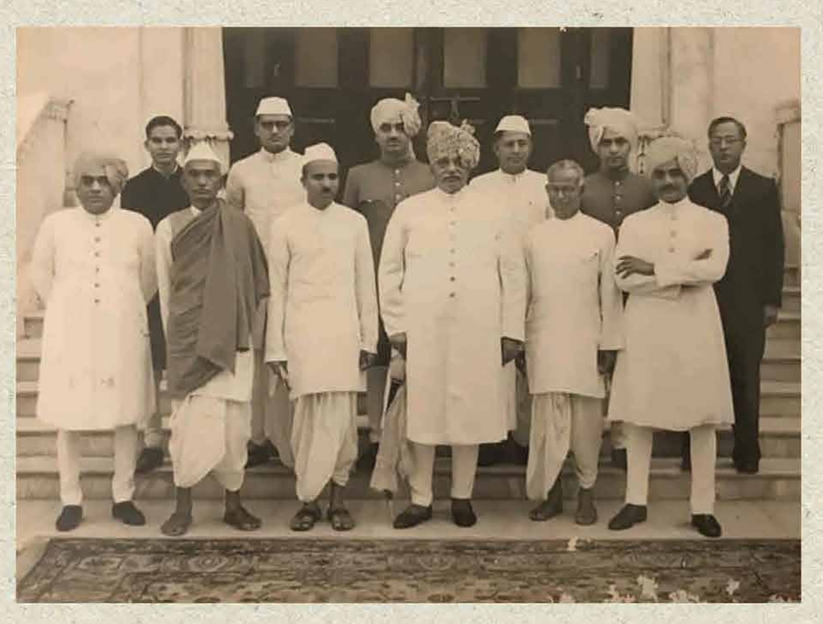

संयुक्त राज्य काठियावाड़ के शासकों और मंत्रियों की परिषद, 15.02.48

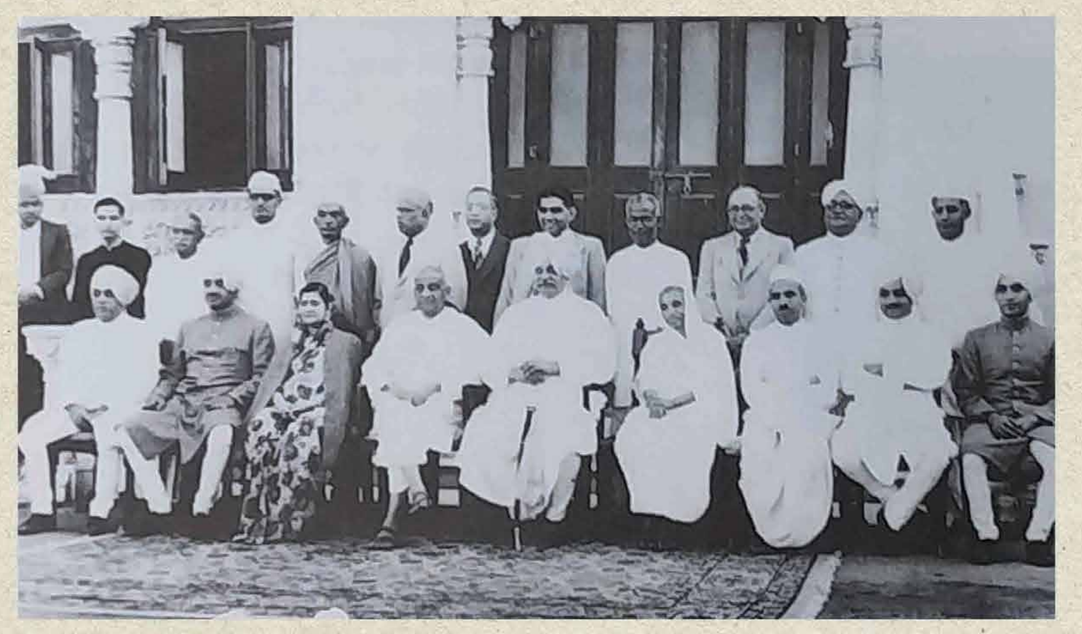

सौराष्ट्र कैबिनेट और सौराष्ट्र के राज्यों के शासकों के साथ सरदार

पानी के छोटे छोटे कुंड गंदे और बेकार हो जाते हैं लेकिन यदि वह साथ मिलकर बड़ी झील का निर्माण करते हैं तो वातावरण शीतल हो जाता है और सब को लाभ होता है ।

15 जनवरी 1948 को भावनगर नगर में एक जनसभा को संबोधित करते हुए पटेल

सरदार के स्वागत को राजकोट में उमड़ी भीड़ जिन्होंने सौराष्ट्र राज्यों के समूह को एक समरूप राज्य सौराष्ट्र में बदल दिया(1948)

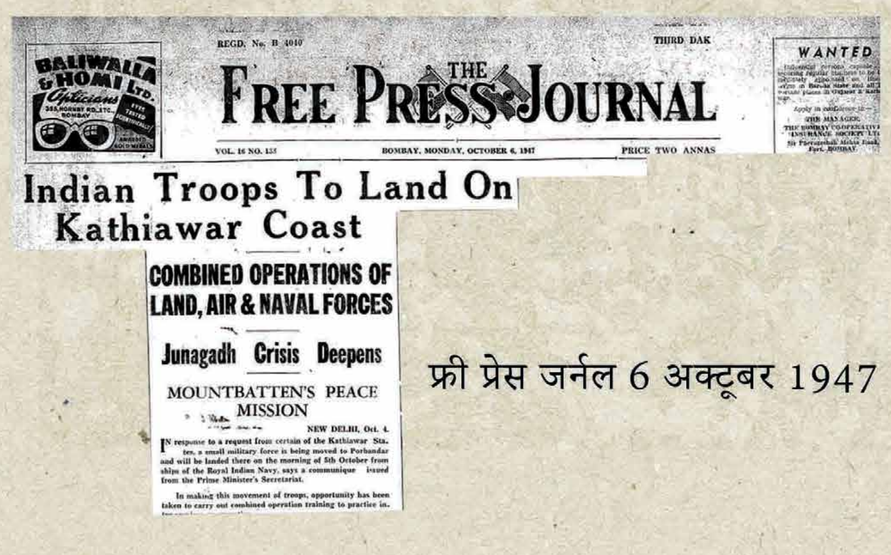

फ्री प्रेस जर्नल 6 अक्टूबर 1947

संयुक्त सौराष्ट्र (काठियावाड़) राज्य, 1948-56

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डेक्कन

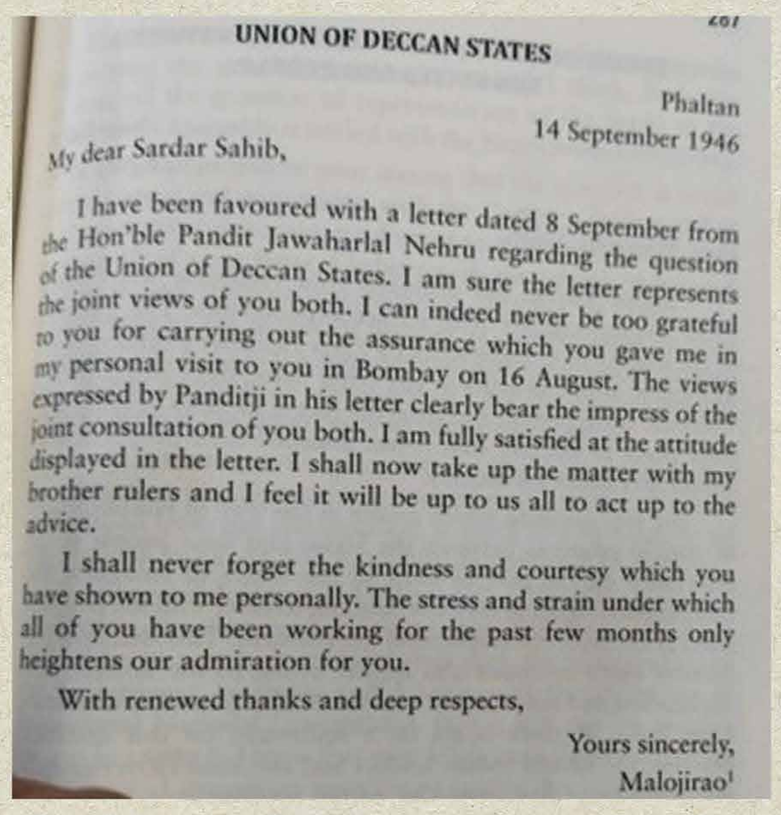

UNION OF DECCAN STATES

Phaltan
14 September 1946

My dear Sardar Sahib,

I have been favoured with a letter dated 8 September from the Hon'ble Pandit Jawaharlal Nehru regarding the question of the Union of Deccan States. I am sure the letter represents the joint views of you both. I can indeed never be too grateful to you for carrying out the assurance which you gave me in my personal visit to you in Bombay on 16 August. The views expressed by Panditji in his letter clearly bear the impress of the joint consultation of you both. I am fully satisfied at the attitude displayed in the letter. I shall now take up the matter with my brother rulers and I feel it will be up to us all to act up to the advice.

I shall never forget the kindness and courtesy which you have shown to me personally. The stress and strain under which all of you have been working for the past few months only heightens our admiration for you.

With renewed thanks and deep respects,

Yours sincerely,
Malojirao[1]

पटेल को डेक्कन राज्यों का पत्र

बड़ोदा

D.O. No 199-P/47

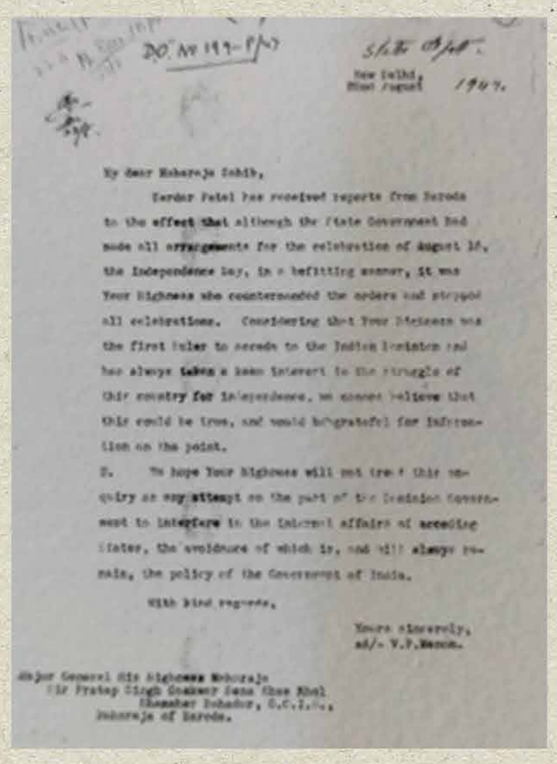

New Delhi,
[illegible] August 1947.

My dear Maharaja Sahib,

Sardar Patel has received reports from Baroda to the effect that although the State Government had made all arrangements for the celebration of August 15, the Independence Day, in a befitting manner, it was Your Highness who countermanded the orders and stopped all celebrations. Considering that Your Highness was the first Ruler to accede to the Indian Dominion and has always taken a keen interest in the struggle of this country for independence, we cannot believe that this could be true, and would be grateful for information on the point.

2. We hope Your Highness will not treat this enquiry as any attempt on the part of the Dominion Government to interfere in the internal affairs of acceding States, the avoidance of which is, and will always remain, the policy of the Government of India.

With kind regards,

Yours sincerely,
sd/- V.P. Menon.

Major General His Highness Maharaja
Sir Pratap Singh Gaekwar Sena Khas Khel
Shamsher Bahadur, G.C.I.E.,
Maharaja of Baroda.

वी पी मेनन का पत्र मेजर जनरल महाराजा प्रताप सिंह गायकवाड़ को

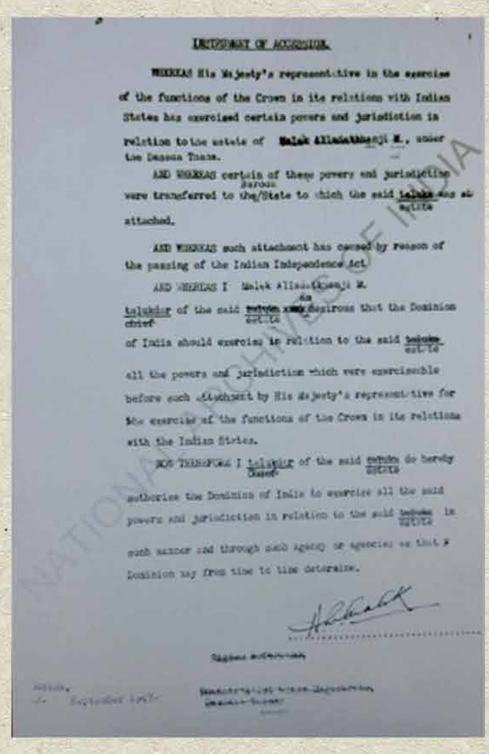

INSTRUMENT OF ACCESSION.

WHEREAS His Majesty's representative in the exercise of the functions of the Crown in its relations with Indian States has exercised certain powers and jurisdiction in relation to the estate of Malak Alladadkhanji M., under the [illegible] Thana.

AND WHEREAS certain of these powers and jurisdiction were transferred to the Baroda State to which the said estate was attached.

AND WHEREAS such attachment has ceased by reason of the passing of the Indian Independence Act.

AND WHEREAS I Malak Alladadkhanji M. chief of the said estate am desirous that the Dominion of India should exercise in relation to the said estate all the powers and jurisdiction which were exercisable before such attachment by His Majesty's representative for the exercise of the functions of the Crown in its relations with the Indian States.

NOW THEREFORE I chief of the said estate do hereby authorise the Dominion of India to exercise all the said powers and jurisdiction in relation to the said estate in such manner and through such agency or agencies as that Dominion may from time to time determine.

[illegible]

अंगीकार पत्र

बड़ौदा के बंबई में ऐतिहासिक विलय से पहले, पटेल का स्वागत करते हुए डॉ. जीवराज मेहता और महाराजा प्रताप सिंह।

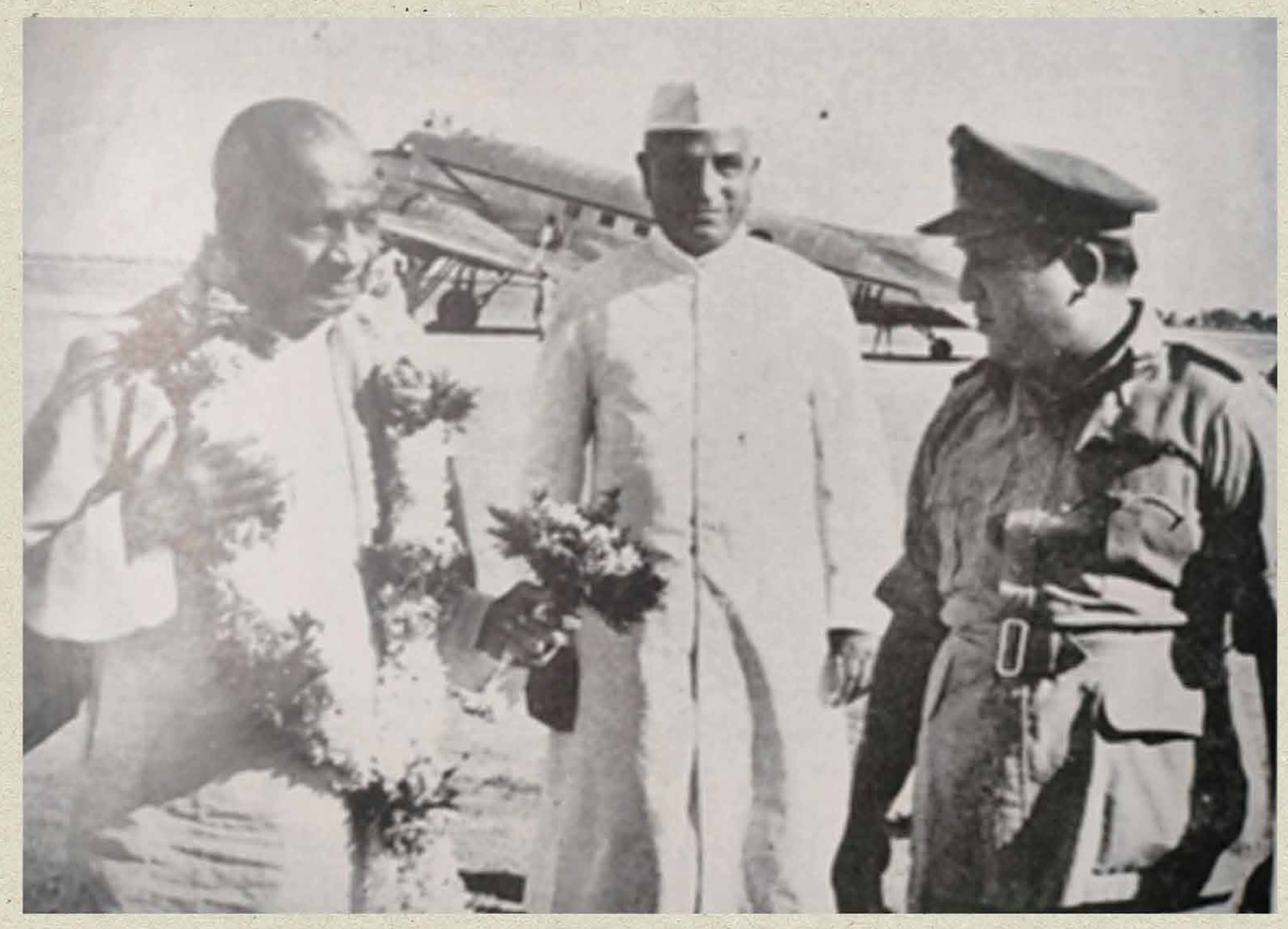

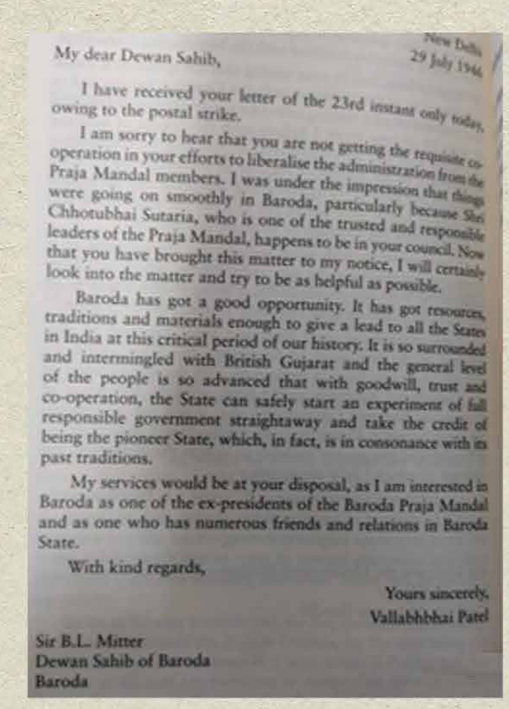

New Delhi
29 July 1946

My dear Dewan Sahib,

I have received your letter of the 23rd instant only today, owing to the postal strike.

I am sorry to hear that you are not getting the requisite co-operation in your efforts to liberalise the administration from the Praja Mandal members. I was under the impression that things were going on smoothly in Baroda, particularly because Shri Chhotubhai Sutaria, who is one of the trusted and responsible leaders of the Praja Mandal, happens to be in your council. Now that you have brought this matter to my notice, I will certainly look into the matter and try to be as helpful as possible.

Baroda has got a good opportunity. It has got resources, traditions and materials enough to give a lead to all the States in India at this critical period of our history. It is so surrounded and intermingled with British Gujarat and the general level of the people is so advanced that with goodwill, trust and co-operation, the State can safely start an experiment of full responsible government straightaway and take the credit of being the pioneer State, which, in fact, is in consonance with its past traditions.

My services would be at your disposal, as I am interested in Baroda as one of the ex-presidents of the Baroda Praja Mandal and as one who has numerous friends and relations in Baroda State.

With kind regards,

Yours sincerely,
Vallabhbhai Patel

Sir B.L. Mitter
Dewan Sahib of Baroda
Baroda

पटेल का पत्र बड़ौदा के दीवान, श्री बी. एल. मित्तर को

सरदार पटेल और मणिबेन (दाएं) बड़ौदा के महाराजा (बीच में) और उनके मुख्यमंत्री डॉ. जीवराज मेहता (बाएं) के साथ नई दिल्ली के लिए प्रस्थान से पहले बरोडा हवाई अड्डे पर

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

बड़ौदा के महाराजा श्री प्रताप सिंह राव गायकवाड़ और डॉ. जीवराज मेहता के साथ सरदार

राजस्थान

कई लोग चकित हैं कि वल्लभभाई पटेल ने इतने कम समय में उन्हें (राजाओं को) हरा दिया। पुराणों में कहा गया है कि क्षत्रियों को समाप्त करने के लिए परशुराम ने इक्कीस युद्ध लड़े थे। लेकिन नए परशुराम को भारत में राजाओं का सफाया करने के लिए किसी युद्ध की आवश्यकता नहीं पड़ी।

के. एम. पणिकर

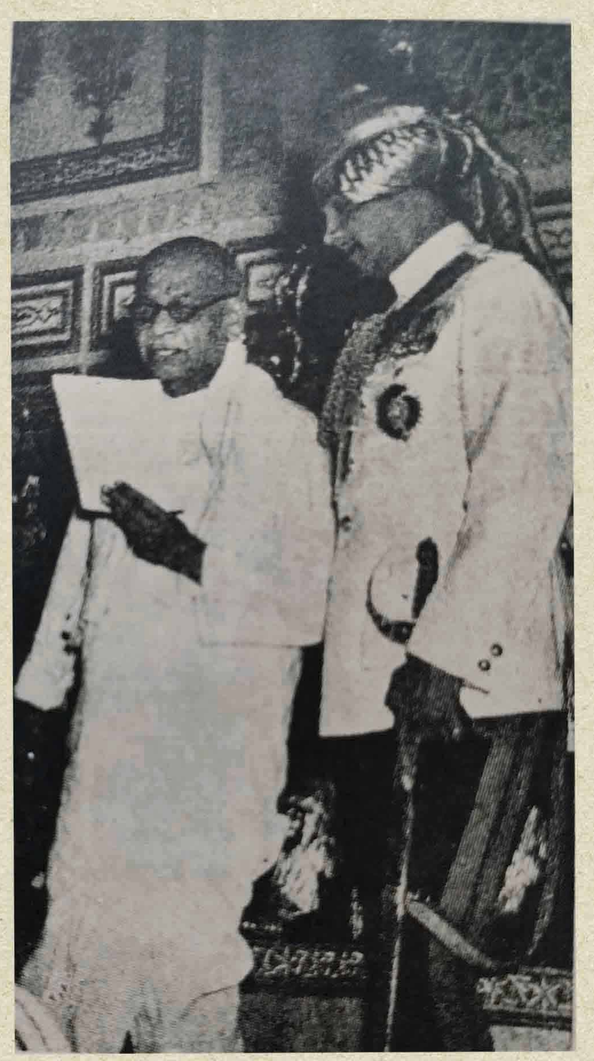

30 मार्च 1949 को जयपुर के महाराजा को संयुक्त राज्य राजस्थान के राज प्रमुख के रूप में शपथ ग्रहण कराते हुए सरदार पटेल

राजस्थान संघ का उद्घाटन कर दरबार हॉल से निकलते सरदार। दाईं ओर जयपुर के महाराजा और बाईं ओर कोटा के महाराजा

सर वी.टी. कृष्णामाचारी, पूर्व मुख्यमंत्री, जयपुर, मणिबेन पटेल और वी. शंकर विशाल राजस्थान संघ के उद्घाटन समारोह के अवसर पर एक सभा में, मार्च 1949

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उदयपुर

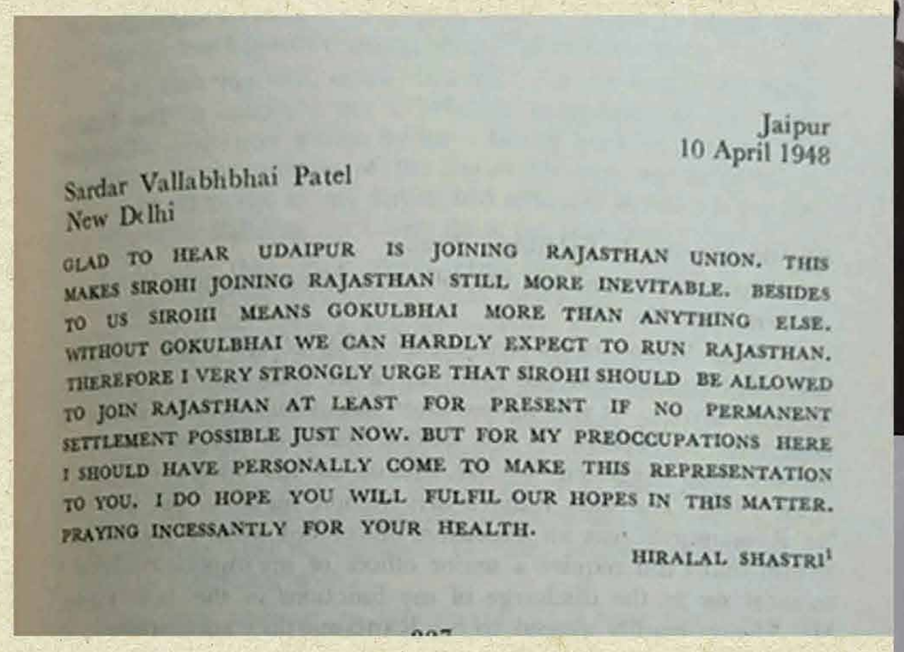

Jaipur
10 April 1948

Sardar Vallabhbhai Patel
New Delhi

GLAD TO HEAR UDAIPUR IS JOINING RAJASTHAN UNION. THIS MAKES SIROHI JOINING RAJASTHAN STILL MORE INEVITABLE. BESIDES TO US SIROHI MEANS GOKULBHAI MORE THAN ANYTHING ELSE. WITHOUT GOKULBHAI WE CAN HARDLY EXPECT TO RUN RAJASTHAN. THEREFORE I VERY STRONGLY URGE THAT SIROHI SHOULD BE ALLOWED TO JOIN RAJASTHAN AT LEAST FOR PRESENT IF NO PERMANENT SETTLEMENT POSSIBLE JUST NOW. BUT FOR MY PREOCCUPATIONS HERE I SHOULD HAVE PERSONALLY COME TO MAKE THIS REPRESENTATION TO YOU. I DO HOPE YOU WILL FULFIL OUR HOPES IN THIS MATTER. PRAYING INCESSANTLY FOR YOUR HEALTH.

HIRALAL SHASTRI[1]

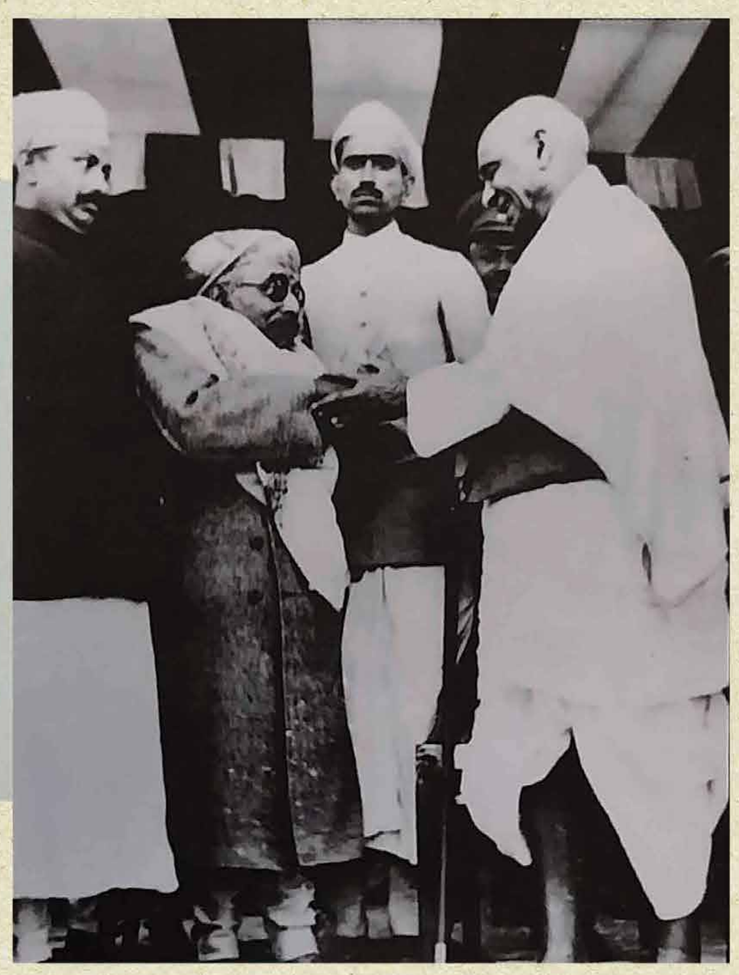

सरदार पटेल उदयपुर के महाराजा भूपाल सिंह के साथ, 6 जनवरी 1949

जयपुर

जयपुर के महाराजा के साथ सरदार पटेल।

जोधपुर

जिन्ना ने एक सादे काग़ज़ पर हस्ताक्षर करके जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह को अपने फाउंटेन पेन के साथ यह कहते हुए दे दिया कि आप अपनी शर्तों को भर सकते हैं ।

-वी. पी. मेनन

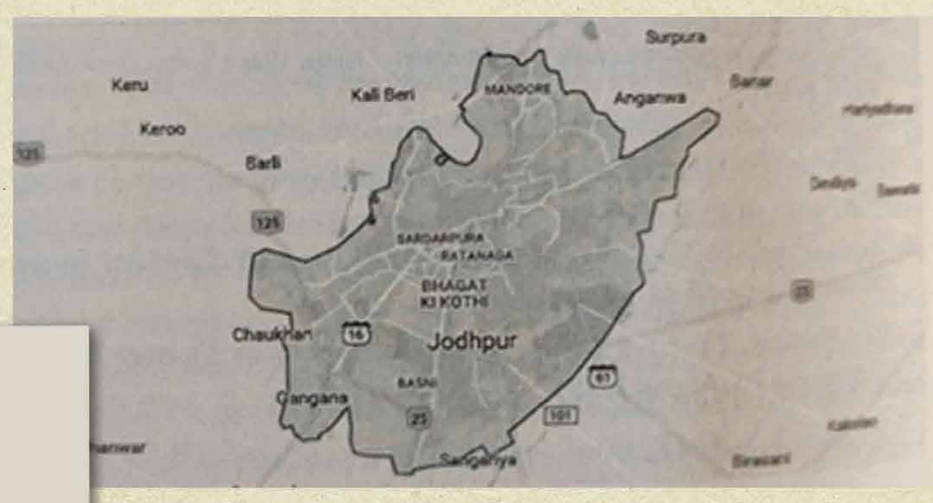

मत्स्य संघ

भरतपुर में आयोजित मत्स्य संघ का उद्घाटन, 17.03.1948।
नए संघ में धौलपुर, भरतपुर, अलवर और करौली राज्य शामिल ।

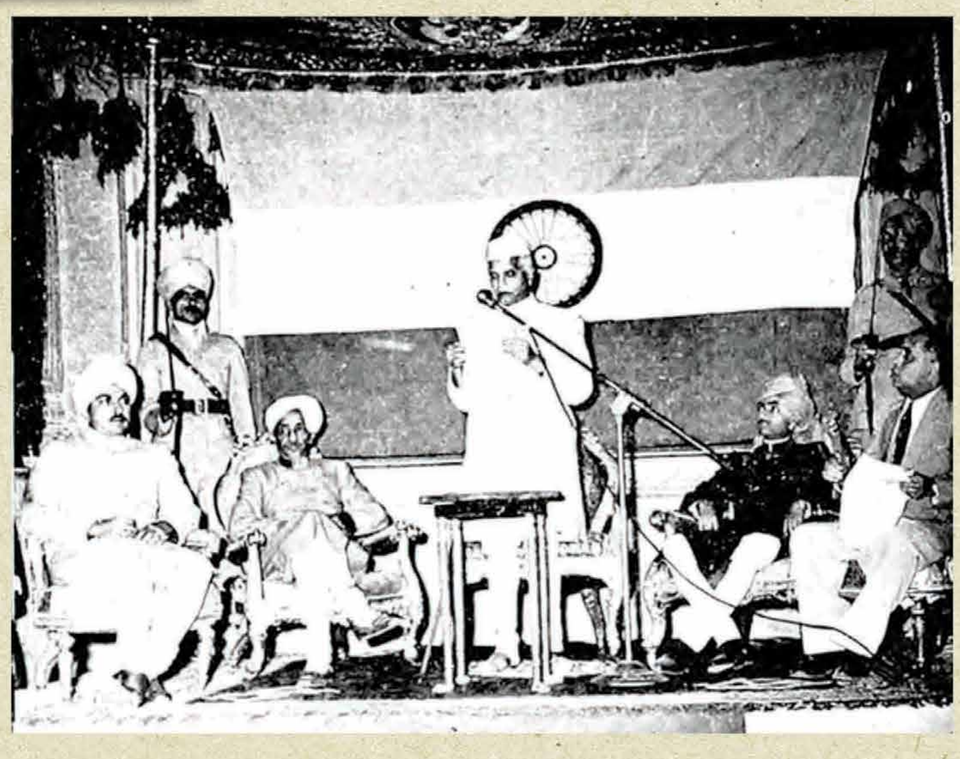

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मालवा संघ

4 दिसंबर 1948 को ग्वालियर में मालवा संघ की विधान सभा का उद्घाटन करते सरदार पटेल

सरदार पटेल दिसम्बर 1948 में मालवा संघ सभा के प्रथम अधिवेशन को संबोधित करते हुए

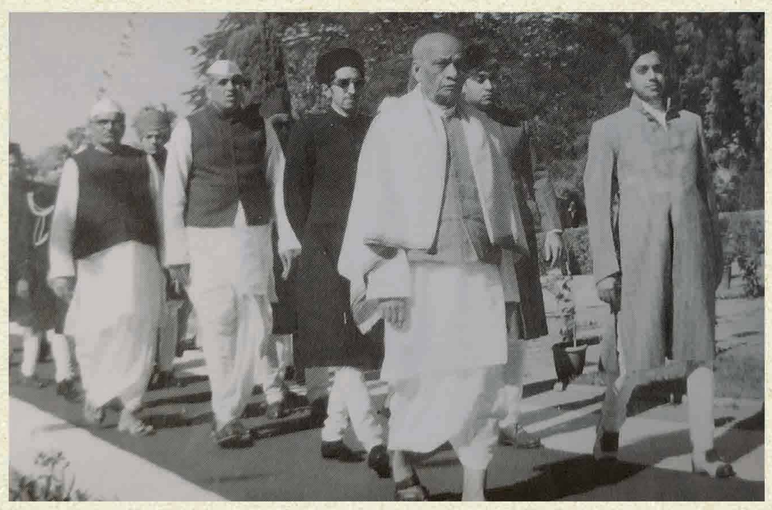

मालवा संघ का गठन दिसंबर 1948 में हुआ, उप प्रधान मंत्री ने मालवा संघ की विधान सभा के सत्र का उद्घाटन किया। समारोह से निकलते सरदार के साथ चलते हुए ग्वालियर और इंदौर के महाराजा और विधायिका के सदस्य।

नागपुर

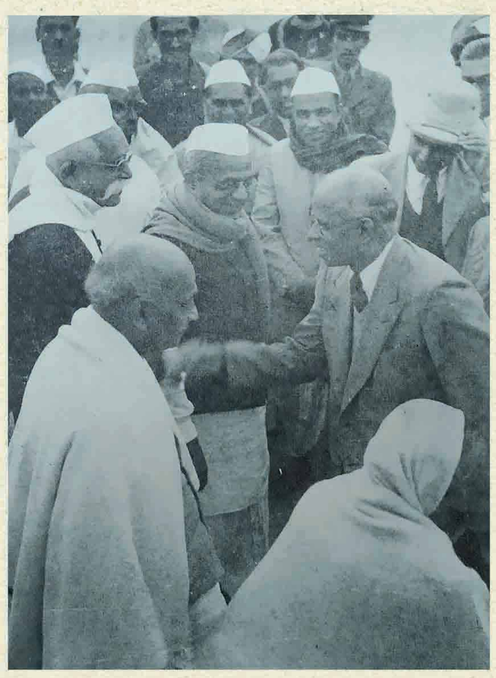

दिसंबर 1947 में नागपुर के दौरे पर सरदार पटेल का स्वागत करते प्रीमियर शुक्ला वी. पी. मेनन एवं अन्य

इंदौर

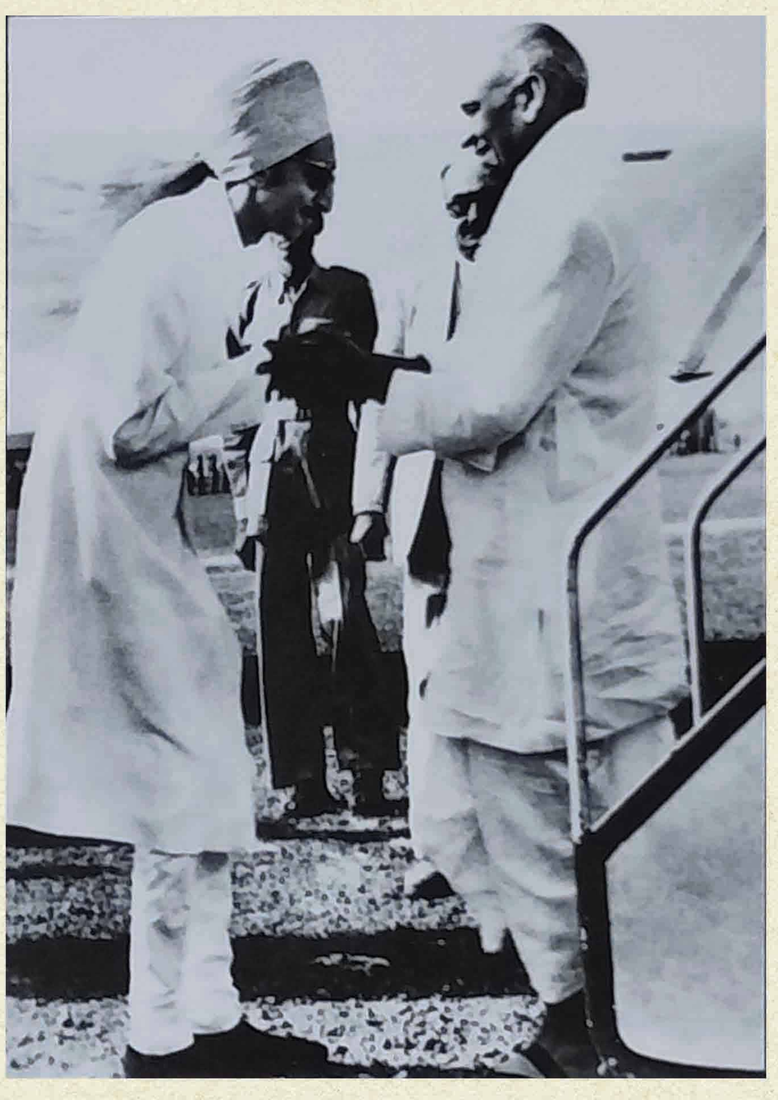

इंदौर हवाई अड्डे पर सरदार का स्वागत करते हुए इंदौर के महाराजा श्री यशवंत राव होल्कर

भोपाल

भोपाल के नवाब हमीदुल्लाह, भोपाल के भारत में विलय पर वी.पी. मेनन के साथ चर्चा के लिए आते हुए।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पठियाला एवं पूर्वी पंजाब के राज्य

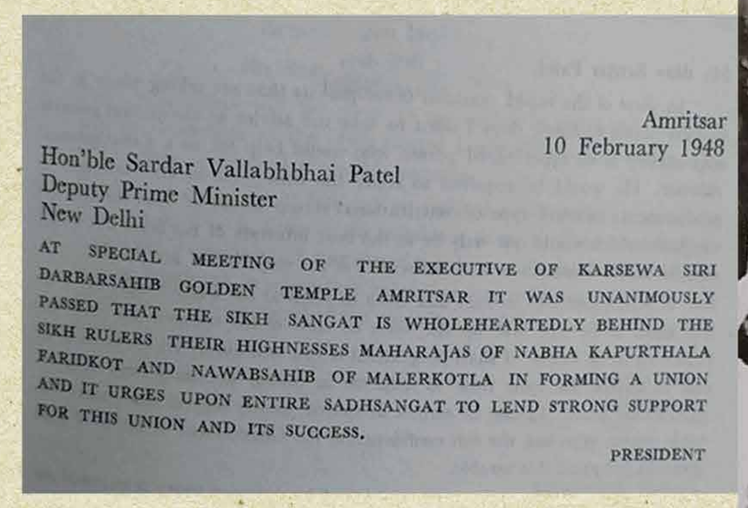

Amritsar
10 February 1948

Hon'ble Sardar Vallabhbhai Patel
Deputy Prime Minister
New Delhi

AT SPECIAL MEETING OF THE EXECUTIVE OF KARSEWA SIRI DARBARSAHIB GOLDEN TEMPLE AMRITSAR IT WAS UNANIMOUSLY PASSED THAT THE SIKH SANGAT IS WHOLEHEARTEDLY BEHIND THE SIKH RULERS THEIR HIGHNESSES MAHARAJAS OF NABHA KAPURTHALA FARIDKOT AND NAWABSAHIB OF MALERKOTLA IN FORMING A UNION AND IT URGES UPON ENTIRE SADHSANGAT TO LEND STRONG SUPPORT FOR THIS UNION AND ITS SUCCESS.

PRESIDENT

पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्य संघ (PEPSU) के उद्घाटन के अवसर पर सरदार पटेल,15 जुलाई 1948
संघ में पटियाला, कपूरथला, नाभा, जींद, फरीदकोट, मलेरकोटला, कलसिया और नालागढ़ राज्य शामिल ।

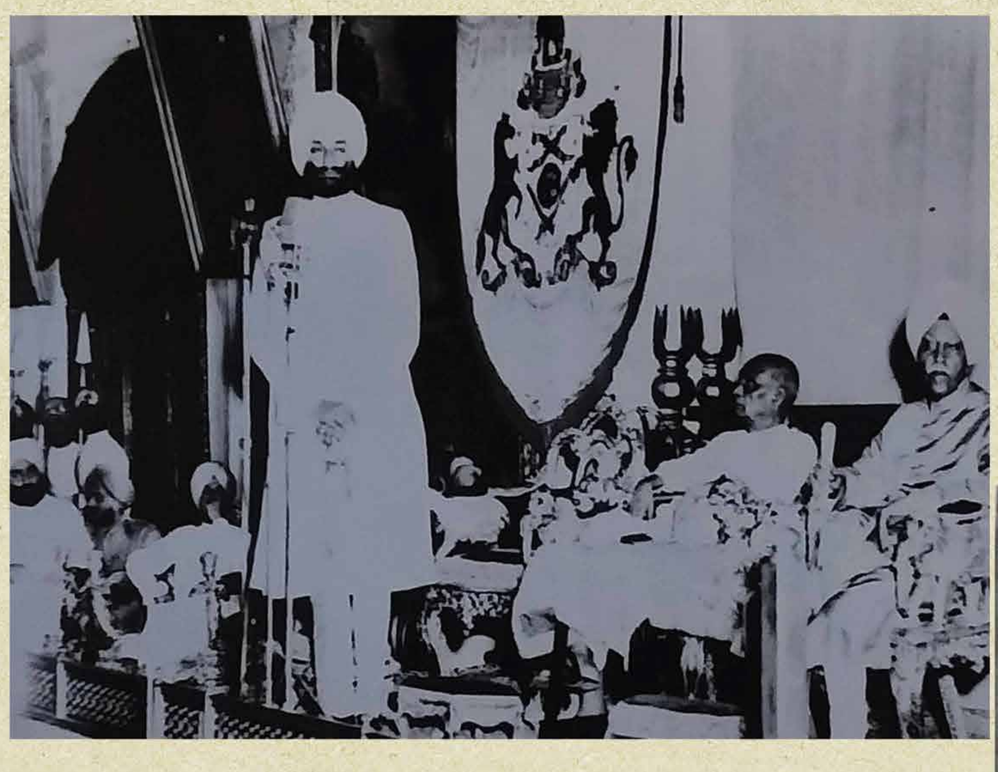

1948 में PEPSU के प्रमुख शासकों के साथ सरदार पटेल

पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्यों के शासकों के साथ वी.पी. मेनन

पटियाला और पूर्वी पंजाब राज्यों के अनुबंध पर हस्ताक्षर करते हुए

पश्चिमी पंजाब से आबादी विस्थापन से जुड़ी समस्याओं पर विचार करने के लिए सितंबर 1947 में राज्यों के मंत्रालय द्वारा बुलाई गई पूर्वी पंजाब के प्रतिनिधियों की एक बैठक को संबोधित करते हुए सरदार पटेल। बाएं से दाएं: एच. आर. शर्मा विदेश मंत्री, पटियाला; पटियाला के महाराजा; जनरल रसेल; सरदार के बाईं ओर मेजर जनरल करियप्पा वी.पी. मेनन, सचिव, राज्य मंत्रालय

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

छत्तीसगढ़

5.12.1947, छत्तीसगढ़ राज्यों के विलय के लिए नागपुर हवाई अड्डे पर आगमन, सी. पी. और बरार के प्रीमियर रविशंकर शुक्ल (दाएं) और डॉ. बारलिंगे (बाएं)

नवंबर 1948 में नागपुर में पुलिस परेड की सलामी लेते हुए सरदार । उनके पीछे मध्य प्रांत के प्रीमियर रविशंकर शुक्ल

बिहार

बिहार के राज्यपाल एम.एस. अणे (सबसे बाएं) और प्रमुख एस.के. सिन्हा (दाएं से तीसरे) के साथ सरदार

> पूर्वी राज्यों के विलय ने वातावरण में जोश भर दिया है... भारतीय राज्य अधिक समय तक स्वेच्छाचारिता के गढ़ नहीं रह सकते थे। गढ़ों ने धीरे-धीरे रास्ता देना शुरू कर दिया ।
>
> -सरदार पटेल

मणिपुर

मणिपुर रियासत के विलय के दस्तावेज की तस्वीर जिसे मणिपुर राज्य राजपत्र में मणिपुर के महाराजा के आदेश से प्रकाशित किया गया था।

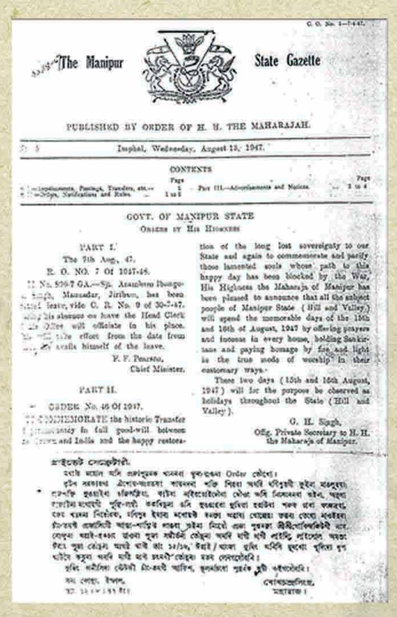

The Manipur State Gazette

PUBLISHED BY ORDER OF H. H. THE MAHARAJAH.

Imphal, Wednesday, August 13, 1947.

CONTENTS

GOVT. OF MANIPUR STATE
ORDERS BY HIS HIGHNESS

PART I.

The 7th Aug., 47.

R. O. NO. 7 Of 1947-48.

PART II.

ORDER No. 46 Of 1947.

असम

गुवाहाटी (असम) के दौरे पर सरदार असम के प्रीमियर बारदोलोई के साथ। उनके पीछे फेल्ट हेट में गवर्नर

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

उड़ीसा

कटक पहुंचने पर उड़ीसा के राज्यपाल काटजू और प्रीमियर महताब के साथ सरदार पटेल गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करते हुए

पटेल राज्यपाल काटजू और पूर्वी राज्यों के शासकों के साथ कटक में, दिसंबर 1947

THE TIMES OF INDIA

"Orissa States' Merger Final And Irrevocable"

SARDAR PATEL'S ADVICE TO RULERS

NEW DELHI, August 28.

"THE Deputy Prime Minister has made it clear to the Rulers of the Orissa States that the decision regarding the integration of their States with the Provinces of Orissa and the C.P. is final and irrevocable," says a "communique" issued by the States Ministry, Government of India.

The Ministry of States has been receiving reports that for several months past there has been a move afoot to form a union of the States which were comprised in what was known as the Eastern States Agency, the "communique" adds.

The Rulers of all the States of this Agency signed agreements at Cuttack and Nagpur on December 14 and 15, 1947, to integrate their States with the provinces of Orissa and the Central Provinces. Soon after that an agitation started to separate certain States from Orissa and the Central Provinces and merge them in Bihar. Some of the Rulers also submitted a memorandum for the clarification of their position vis-a-vis the provinces and particularly desiring a union on the model of other unions of States formed in India.

After careful examination of all facts of the case and the considerations put forward by the Provincial Governments, the Government of India decided to separate Seraikela and Kharsawan from Orissa and integrate them with the District of Singhbhum in Bihar.

While announcing this decision, it was made clear in the "communique" issued on May 17, that Government had finally decided to merge these States in the provinces in all branches of administration with a common legislature, a common judiciary and a common executive. Some of the Rulers did not, however, consider the "communique" to be the Government's final decision, and while sending their reply to their communication, continued supporting the movement for the formation of a union of States. The movement has been particularly active in some of the Orissa States as well as in the Singhbhum District in Bihar.

ADVICE TO RULERS

द टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 24 अगस्त 1948

वप्पला पंगुन्नी मेनन उड़ीसा राज्यों के शासकों के साथ बातचीत करते हुए।

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

त्रावणकोर-कोचीन

त्रावणकोर और कोचीन के शासकों, दो प्रीमियर और उनके सहयोगियों तथा स्थानीय कांग्रेस संगठनों ने एकीकरण के इस कार्य के द्वारा इन गुणों और उद्देश्य की पूर्ण एकता तथा कर्तव्य के प्रति निष्ठा का एक अचूक प्रमाण दिया है और इस प्रकार यह इस अनूठे कार्य की इस सफलता के लिए सुखद संकेत है।

-सरदार पटेल

सरदार पटेल का त्रावणकोर-कोचीन दौरा, मई 1950। बाएं से: कोचीन के महाराजा, सरदार पटेल, त्रावणकोर के महाराजा; पीछे: वी.पी. मेनन, मणिबहन पटेल, वी. शंकर और उनकी बेटियां नौसेना के अधिकारियों के साथ।

त्रावणकोर-कोचीन संघ के गठन के बाद कोचीन के महाराजा के साथ सरदार पटेल बातचीत करते हुए

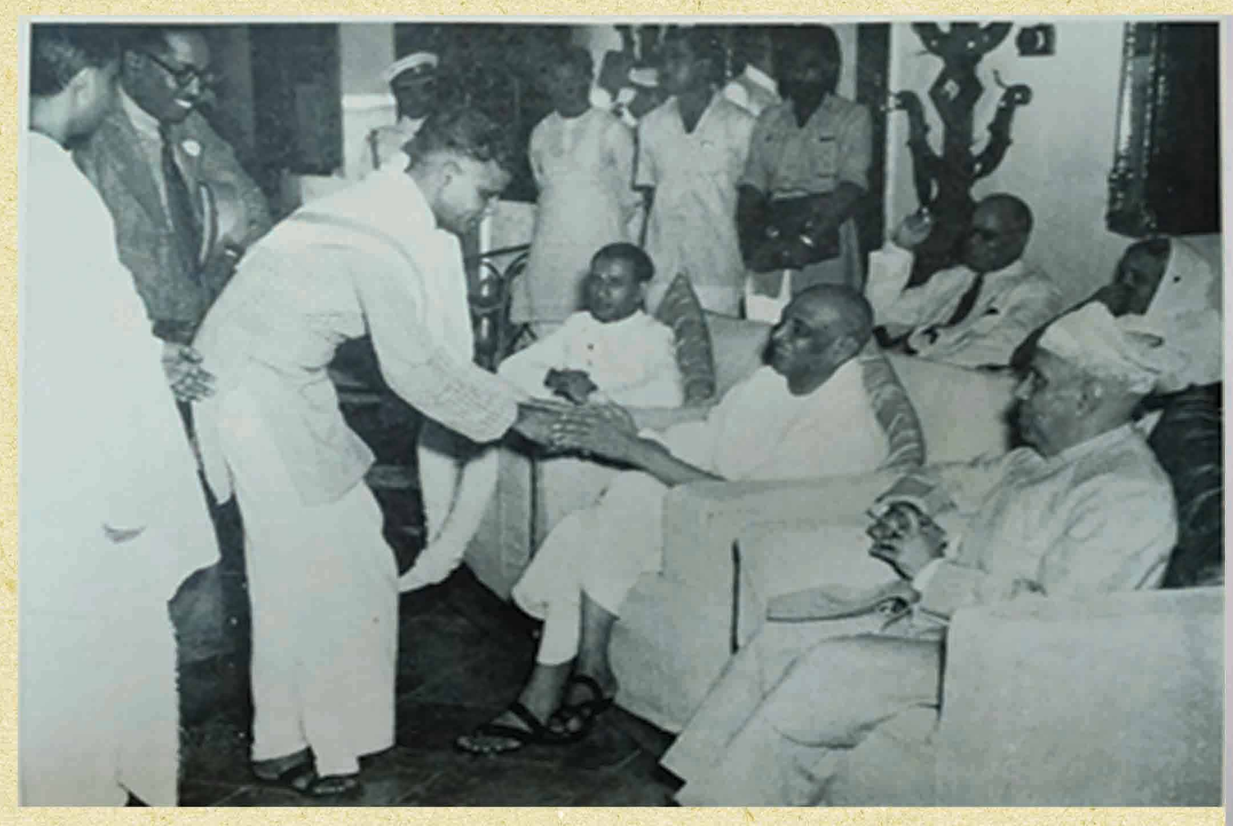

संयुक्त राज्य त्रावणकोर और कोचीन मंत्रालय के सदस्यों का सरदार पटेल से परिचय कराते हुए सरदार के दाहिनी ओर त्रावणकोर के महाराजा और उनके बाईं ओर कोचीन के महाराजा।

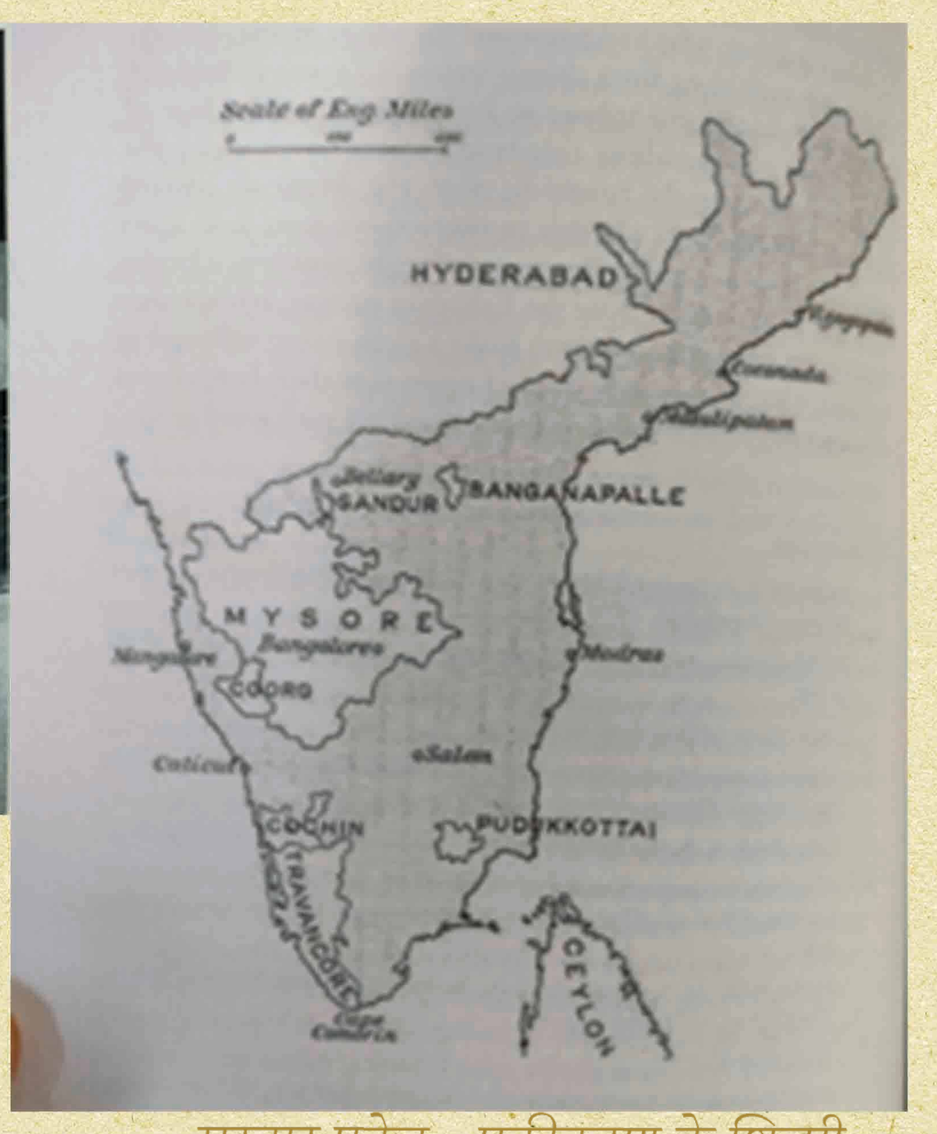

मैसूर

मैसूर के महाराजा और दीवान सर रामास्वामी मुदेलियार के साथ सरदार पटेल

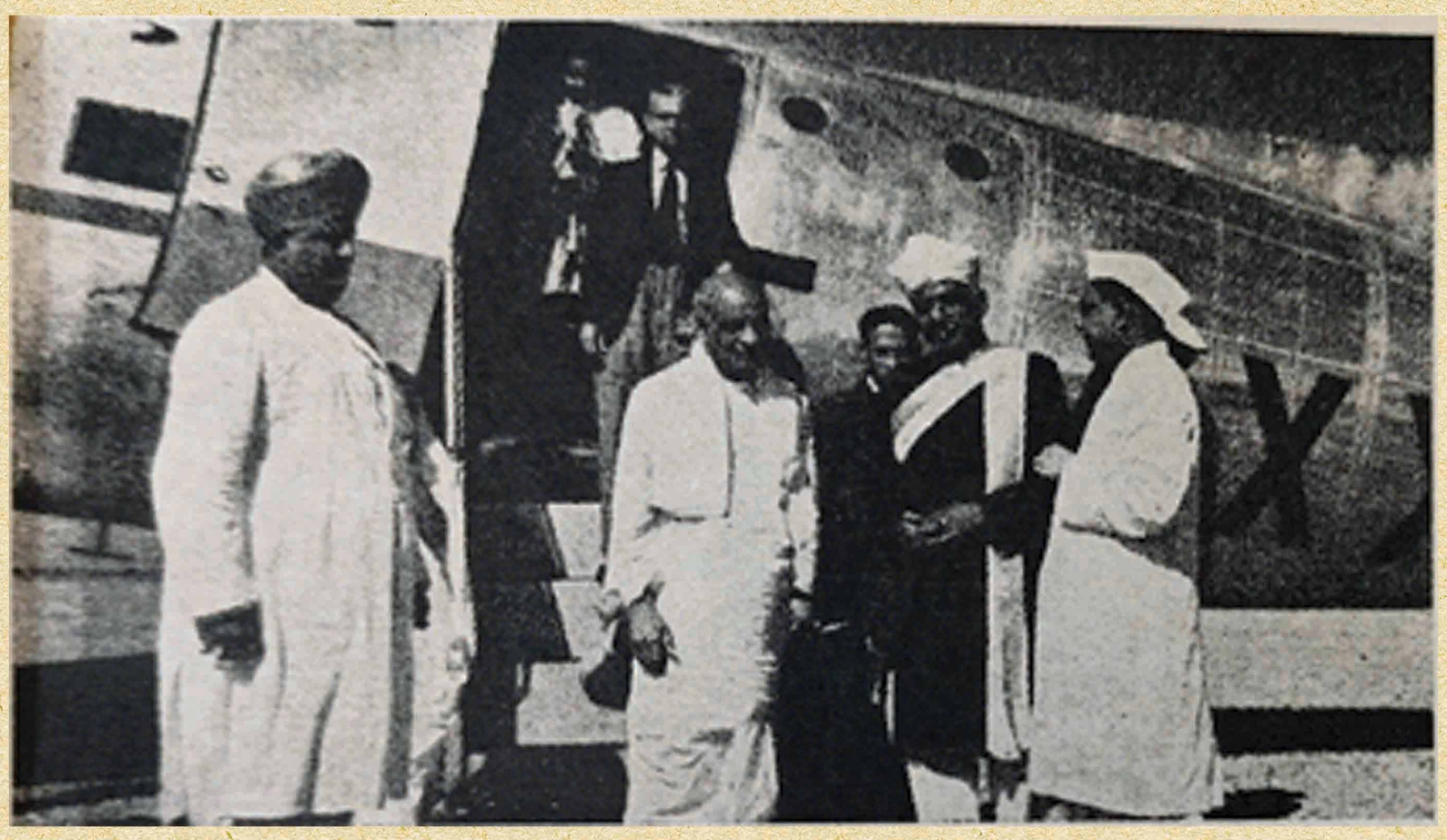

29 जनवरी 1948 को नई दिल्ली में एक प्रेस कांफ्रेंस में सरदार पटेल भारतीय राज्यों की संवैधानिक प्रगति की जानकारी देते हुए

इंडियन एक्सप्रैस, 25 अक्टूबर 1947

FOR DELIGHTFUL ORIENTAL BOUQUET
MYSORE M.R. JETTAPPA'S
PREMALEELA
AGAR BATHIES
PREMALEELA SPECIAL & JAVAJEE

REGD. NO. M. 2734. MORNING.

The Indian Express

VOL. XVI NO. 4. MADRAS: SATURDAY, OCTOBER 25, 1947. 8 PAGES: 1½ ANNAS.

Dawn Of Democracy In Mysore State

Popular Ministry Assumes Charge

"Service Our Motto:" K. C. Reddy Pleads For Public Co-operation

(From Our Staff Correspondent)
BANGALORE, Oct. 24.

THE first popular Ministry in Mysore State responsible to the Legislature assumed charge this afternoon.

The Maharaja of Mysore has appointed the Chief Minister and eight Ministers, besides the Dewan, to the Council of Ministers, announces a Mysore Gazette Extraordinary issued today.

The new Ministers are: Mr. K. Chengalroya Reddy (Chief Minister), Mr. H. C. Dasappa, Mr. K. T. Bashyam Iyengar, Mr. H. Siddhiah, Mr. T. Mariappa, Mr. R. Chennagiramiah, Mr. Mahomed Sheriff, Mr. D. H. Chandrasekhariah and Mr. P. Subbarama Setty.

Mr. K. C. Reddy

Centre Takes Over Manavadar

TAFT TO STAND FOR U. S. PRESIDENCY

MR. IFTIKHARUDDIN MAY JOIN PAKISTAN CABINET

BURMA INDEPENDENCE BILL IN COMMONS

BURMESE PREMIER REACHES RANGOON

No Change

Defence Of 'Muslim World'

PLANS FOR "EASTERN BLOC"

NOON TO TOUR MIDDLE EAST

सरदार को उप प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाते हुए डॉ. राजेंद्र प्रसाद

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारत का संविधान

एकीकरण की प्रक्रिया तिहरी थी और यह "पटेल योजना" के रूप में जानी गई।
1950 के संविधान ने तदनुसार तीन मुख्य प्रकार के राज्यों और क्षेत्रों के बीच अंतर को स्पष्ट कियाः
1. कुल 216 रियासतों का उनके निकटवर्ती प्रांतों (ब्रिटिश प्रांतों) में विलय कर दिया गया। इन विलय किए गए राज्यों को 'पार्ट ए' के राज्यों के क्षेत्र में शामिल किया गया।
2. इकसठ रियासतों को परिवर्तित कर दिया गया तथा उनका केंद्र प्रशासित क्षेत्रों में विलय कर दिया गया और उन्हें भारतीय संविधान के पहले अनुच्छेद के 'पार्ट सी' में शामिल किया गया।
3. इकलौता 'पार्ट डी' क्षेत्र अंडमान और निकोबार द्वीप था।
4. सम्मिलन का तीसरा प्रारूप था, भारतीय संविधान के 'पार्ट बी' में शामिल किए गए राज्य; इनकी कुल संख्या आठ थी।

24 जनवरी 1950, भारत के संविधान पर हस्ताक्षर करते हुए सरदार

बॉम्बे क्रॉनिकल, 26.02.1948

इंडिपेंडेंट इंडिया, 29.02.1948

द नेशनल कॉल, 2 मार्च 1948

भारत ज्योति, 27.06.1948

द हिंदू, 26.03.1948

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

कश्मीर

जम्मू और कश्मीर राज्य भौगोलिक रूप से भारत और पाकिस्तान दोनों से सटा हुआ है। जब राजा हरि सिंह विलय के प्रश्न पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में थे, कश्मीर पर पाकिस्तान की सहायता से सशस्त्र पाकिस्तानी कबायलियों ने आक्रमण कर दिया। 24 अक्टूबर 1947 को महाराजा द्वारा की गई व्याकुलता भरी अपील पर भारत सरकार ने जम्मू कश्मीर का विलय स्वीकार कर लिया और क्षेत्र की रक्षा के लिए सैन्य सहायता और सैनिकों को भेजा। महाराजा ने शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में राज्य में एक सरकार की स्थापना भी कर दी।

लंदन में भारत के उच्चायुक्त वी.के.कृष्ण मेनन ने भारत की पहली आधिकारिक प्रतिक्रिया जारी की (9 नवंबर 1947)। उन्होंने कहा कि कश्मीर की घटनाएँ 'धावा' नहीं थीं, बल्कि एक पूर्ण आक्रमण था, जो पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित और समर्थित था।

"भारत के रक्षा मंत्रालय ने 31 अक्टूबर 1947 को ऑपरेशन की एक रिपोर्ट जारी की। ...दुश्मन पहले ही बारामुला में पहुंच चुके थे, जो श्रीनगर घाटी पहुंचने में रणनीतिक बाधा उत्पन्न कर सकते थे। एक बार जब आक्रमणकारी श्रीनगर के मैदान में प्रवेश कर जाते तो स्थिति बेकाबू हो सकती थी। बारामूला में लगभग 2000 से 5000 आक्रमणकारियों का होने का अनुमान था और उनको (कर्नल राय) अपर्याप्त बल के साथ चुनौती देने या इंतजार करने का फैसला करना था। यदि वे बाद का रास्ता अपनाए होते तो शायद बहुत देर हो जाती और आक्रमणकारी श्रीनगर पहुँच जाते। उन्होंने पूर्व वाले रास्ते को चुना और बारामुला में ही एक टुकड़ी से आक्रमणकारियों पर हमला किया, दूसरी टुकड़ी अपने पीछे रखी और तीसरी टुकड़ी को हवाई क्षेत्र की रक्षा के लिए भेजा। आक्रमणकारी अपने 500 से अधिक मृत साथियों को छोड़ कर बुरी तरह से भागे ... 8 नवंबर को श्रीनगर की चाबी कहे जाने वाले बारामूला पर फिर से कब्जा कर लिया गया और सुरक्षा को पुनः सुनिश्चित कर दिया गया"।

फौजी अखबार में प्रकाशित

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय सैनिक बारामूला, उरी-चकोठी सेक्टर, जम्मू प्रांतों में आक्रमणकारियों से लड़ते, आगे बढ़ते हुए।

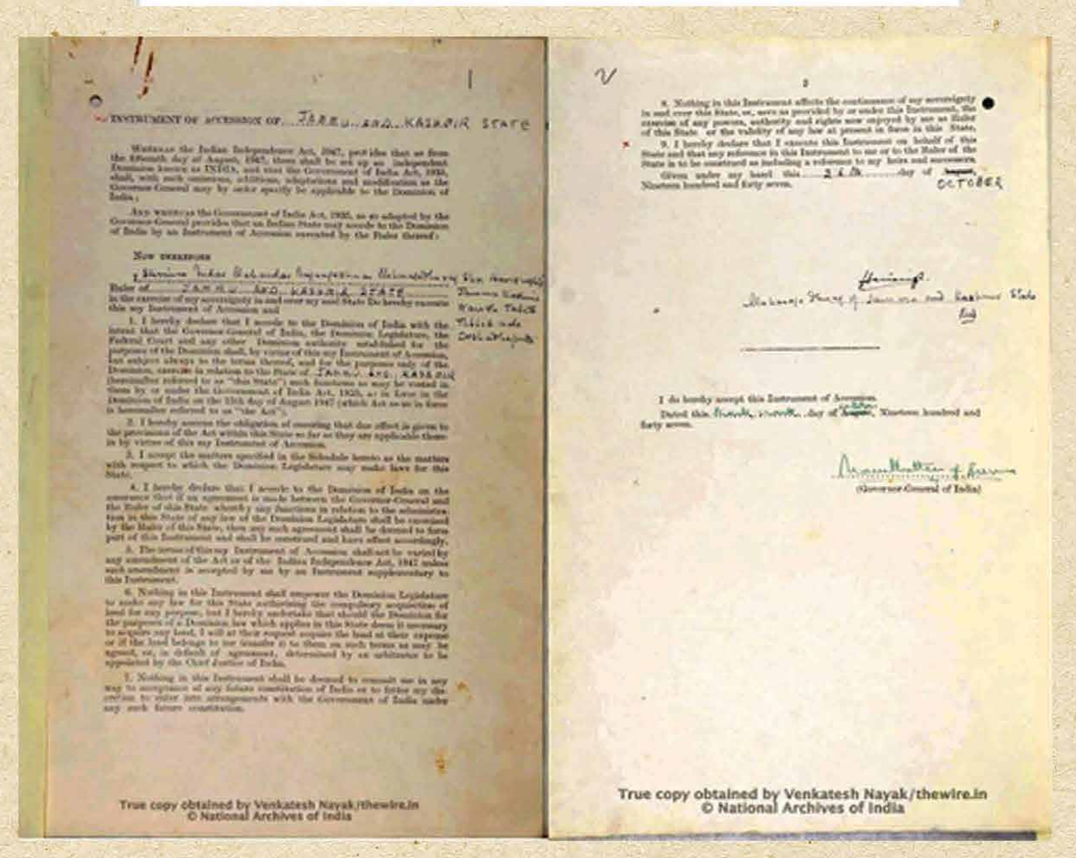

विलय पत्र

इंडियन एक्सप्रेस, 28 अक्टूबर 1947

पाकिस्तान टाइम्स, 28 अक्टूबर 1947

इंडियन एक्सप्रेस, 5 नवंबर 1947

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

24 अक्टूबर 1947 की रात को कश्मीर के तत्कालीन हालात पर भारतीय प्रतिक्रिया। श्रीनगर हवाई अड्डे पर उतरने वाले भारतीय संघ के सैनिक 5.11.1947 को अग्रिम क्षेत्रों की ओर बढ़ते हुए।

सरदार पटेल, हरि सिंह (जम्मू कश्मीर के महाराजा) और अन्य रियासतों के शासकों से मुलाकात

महाराजा हरि सिंह के साथ बैठक के लिए पहुंचे सरदार वल्लभभाई पटेल, 1948।

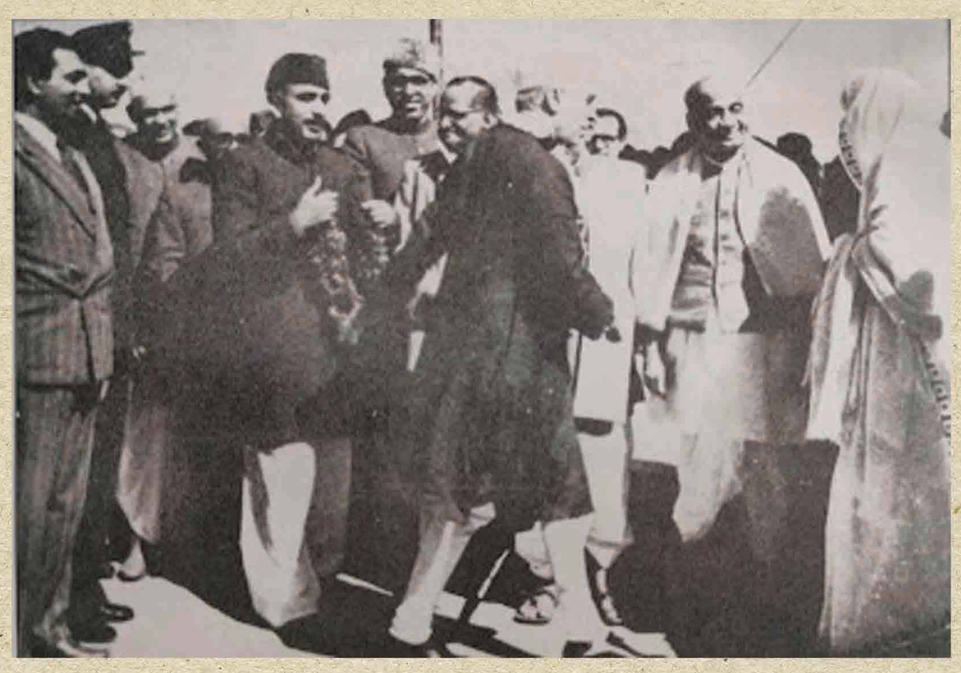

कश्मीर में सरदार पटेल, शेख अब्दुल्ला, बख्शी गुलाम मोहम्मद और अन्य के साथ,1949

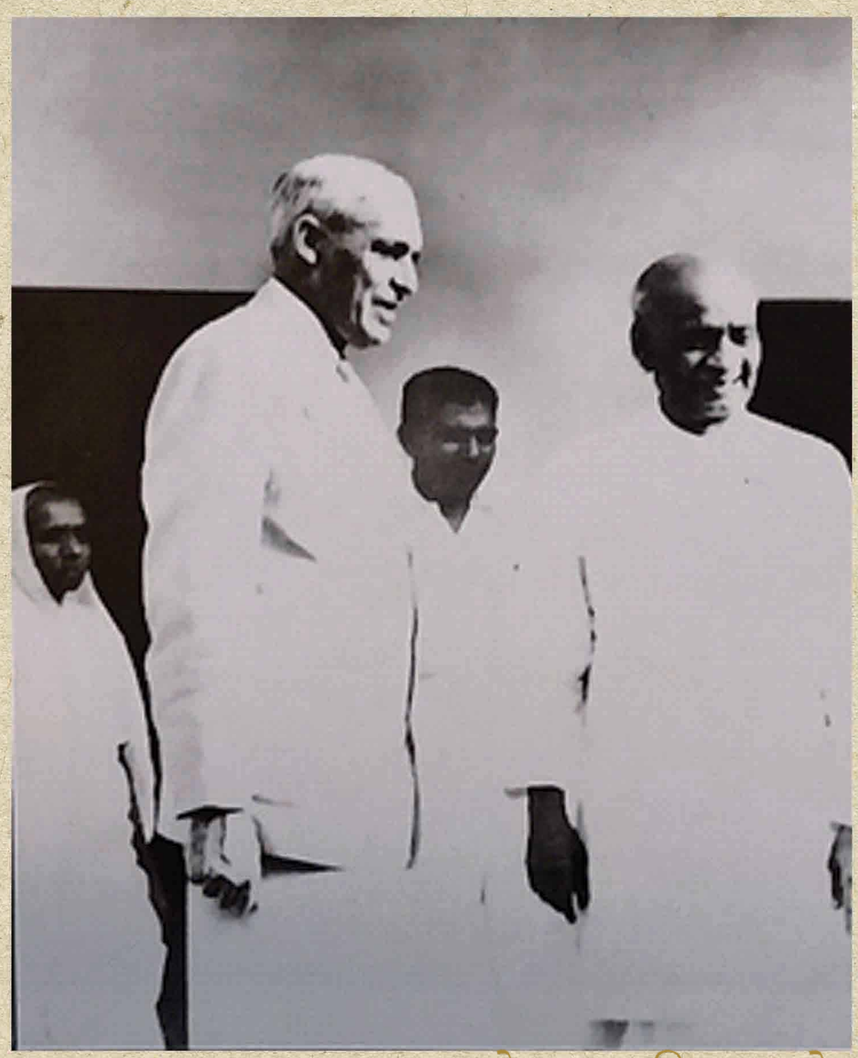

पटेल कश्मीर मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र के मध्यस्थ सर ओवन डिक्सन के साथ चर्चा करते हुए, मई 1950

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जूनागढ़

"विभाजन के बाद हमारे सामने एक विशाल समस्या थी। देश का विभाजन करने वाले मानसिक दुराचार से ग्रस्त थे। उन्हें लगा कि विभाजन का ये कृत्य अंतिम नहीं है, और उन्होंने इसके तुरंत बाद खेल शुरू कर दिया। काठियावाड़ रियासतों के मध्य वे जूनागढ़ गए और उसका पाकिस्तान में विलय करवा दिया... हम समय पर जागे और जिन्होंने खेल खेलने की कोशिश की, उन्होंने देखा कि हम सो नहीं रहे थे"।

सरदार पटेल

जूनागढ़ के नवाब मुहम्मद महाबत खानजी 25 जुलाई, 1947 को चैंबर ऑफ प्रिंसेस की बैठक में निर्धारित किए गए भौगोलिक निकटता के सिद्धांत से बचते हुए, अपनी प्रजा की सलाह के बिना और यहां तक कि काठियावाड़ के अपने साथी राजकुमारों की सलाह के बिना, पाकिस्तान में शामिल हो गए जबकि भारत के साथ जूनागढ़ राज्य भौगोलिक रूप से सटा हुआ था।

भारत सरकार ने अनुचित तरीके से किए गए इस विलय का विरोध किया और जनमत संग्रह द्वारा स्पष्ट निर्णय की मांग की। नवाब जिन्होंने विलय के संबंध में अपने लोगों से कभी परामर्श नहीं किया, अंततः राज्य की भौगोलिक स्थिति और अपने लोगों की इच्छा के बिना लिए गए निर्णय से उत्पन्न कठिनाइयों का सामना नहीं कर सके। जनता की भावना के बढ़ते ज्वार के डर से नवाब के पाकिस्तान भाग जाने के बाद, जूनागढ़ के दीवान और पुलिस आयुक्त के अनुग्रह पर भारत सरकार ने 9 नवंबर, 1947 को जूनागढ़ का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया, हालाँकि विलय का निर्णय, 12-20 फरवरी 1948 के दौरान जनमत संग्रह कराने के बाद किया जाना था। इसका परिणाम, भारतीय संघ में शामिल होने के पक्ष में रहा। जनमत संग्रह में मतदाताओं की संख्या 1,90,870 थी। इनमें से 190,779 ने भारत में शामिल होने के पक्ष में मतदान किया। केवल 91 मत पाकिस्तान के पक्ष में थे। निश्चित तौर पर यह सरदार पटेल के अथक प्रयासों की कूटनीतिक सफलता थी।

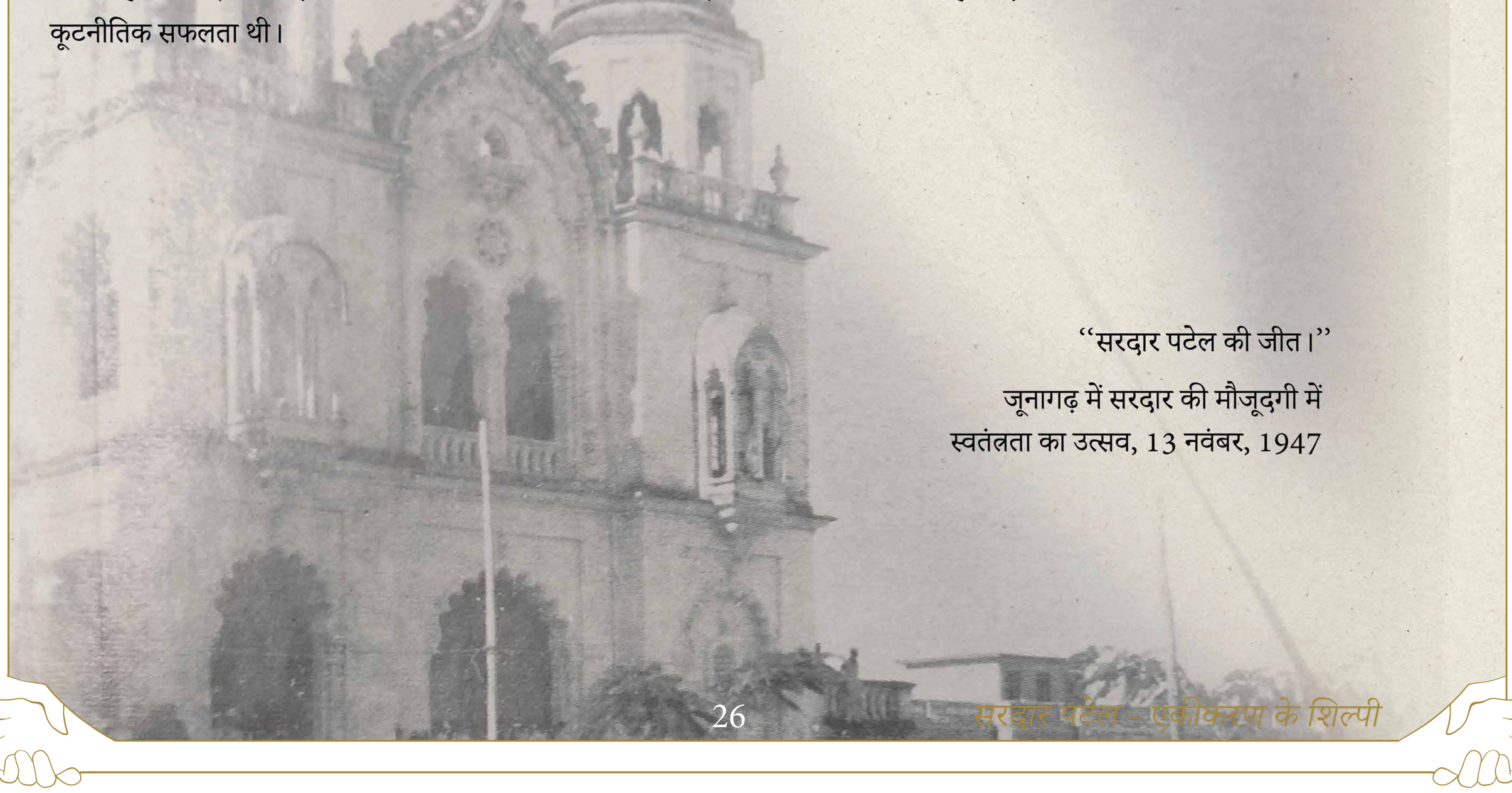

"सरदार पटेल की जीत।"

जूनागढ़ में सरदार की मौजूदगी में
स्वतंत्रता का उत्सव, 13 नवंबर, 1947

THE FREE PRESS JOURNAL

Indian Troops To Land On Kathiawar Coast

COMBINED OPERATIONS OF LAND, AIR & NAVAL FORCES

Junagadh Crisis Deepens

MOUNTBATTEN'S PEACE MISSION

द फ्री प्रेस जर्नल, 4 अक्टूबर 1947

Indian Express

JUNAGADH: INDIA GOVT. ACTS

Refusal To Recognise State's Entry Into Pakistan

PLEBISCITE PROPOSED FOR DECIDING FUTURE

Recall of Troops From Indian Territory Demanded

Junagadh To Accede To India

NEW DELHI, Tues. (A.A.P.).—The Junagadh authorities have announced that the predominantly Hindu population of Junagadh State in the recent referendum voted to accede to India.

Junagadh acceded to Pakistan in August, 1947, on the initiative of its Moslem ruler.

Indian troops in November occupied the State. Pakistan protested and India suggested a plebiscite.

इंडियन एक्सप्रेस, 6 अक्टूबर 1947

THE FREE PRESS JOURNAL

JUNAGADH RULER ABDICATES?

Reported Flight With Family To Karachi

PROVISIONAL GOVERNMENT SEIZES MORE VILLAGES

Flying Scotsman Derailed

23 KILLED, 70 INJURED

HOW WOMEN COULD HELP REFUGEES

Lady Rama Rau's Appeal

द फ्री प्रेस जर्नल, 28 अक्टूबर 1947

13 नवंबर को जूनागढ़ में एक सार्वजनिक स्वागत समारोह में 'अर्ज़ी हुकूमत' की ओर से शामलदास गांधी सरदार पटेल को सम्मानित करते हुए, 1947

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जूनागढ़ के लोगों का उत्साह फैसले के पक्ष में दिखता हुआ, केवल 91 लोगों ने पाकिस्तान के पक्ष में मतदान किया। इस फैसले के बाद जूनागढ़ आधिकारिक तौर पर भारत का हिस्सा बन गया, 1948

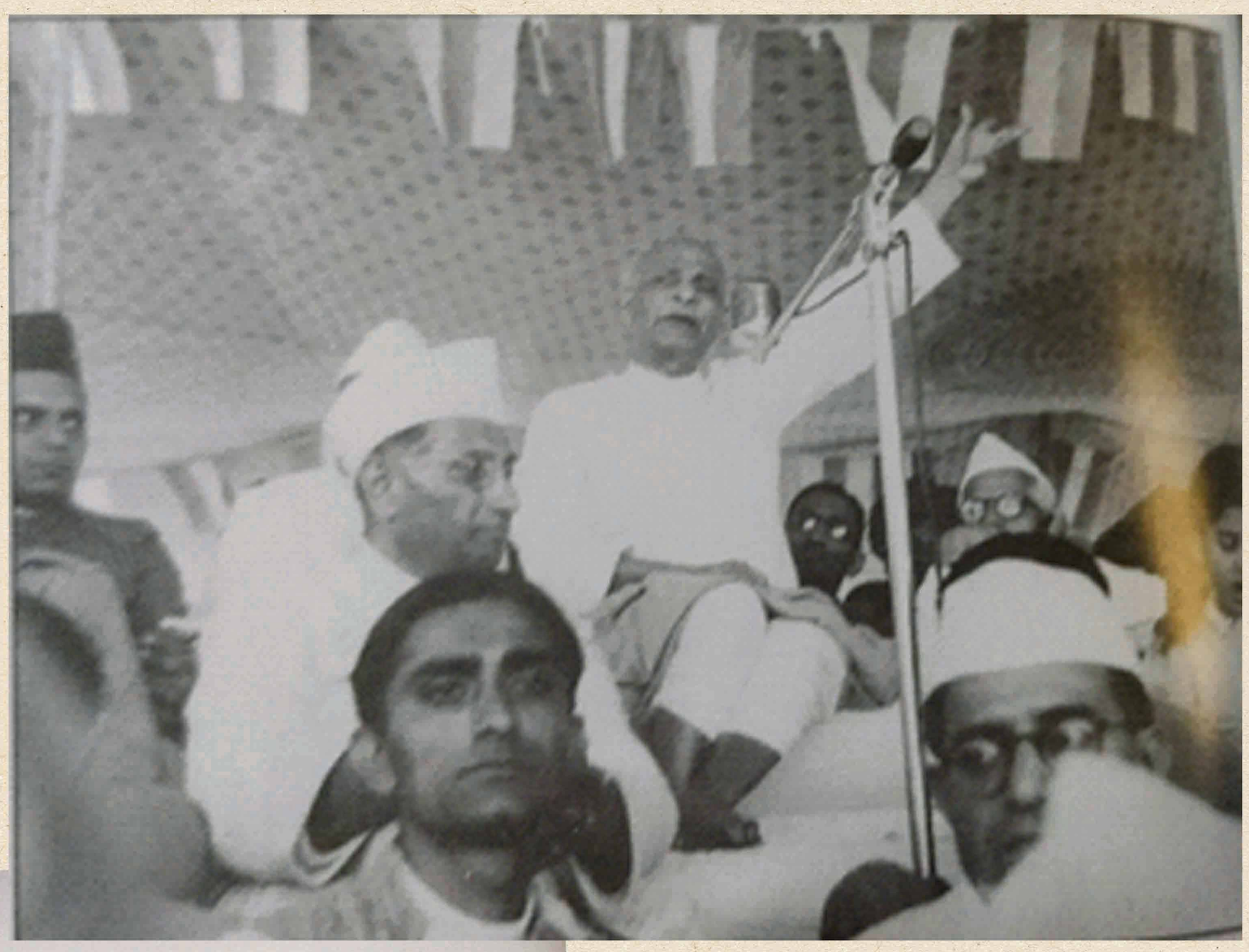

अर्जी हुकूमत अभियान की सफलता के बाद "आपके दिन चले गए" और ये भारतीय संघ के साथ रियासतों के एकीकरण की दिशा में एक कदम है।
जूनागढ़ में एक सभा को सम्बोधित करते हुए सरदार पटेल, 1947

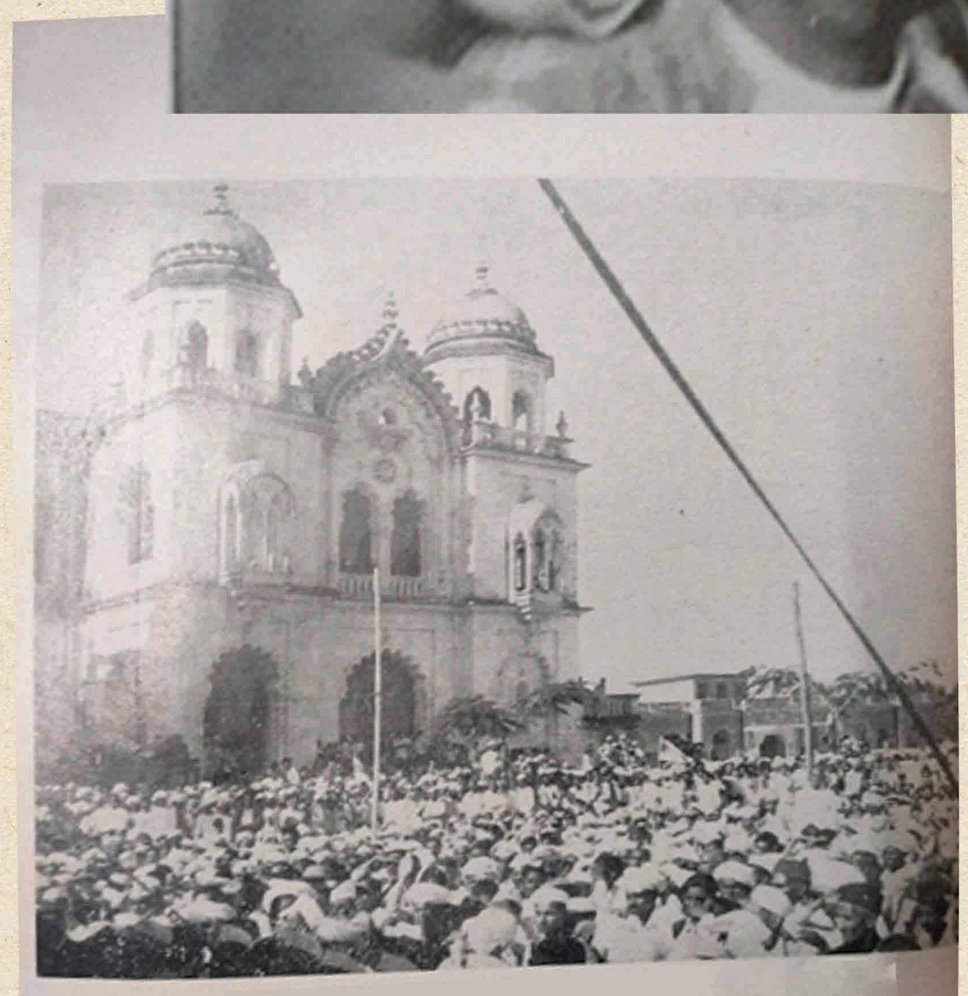

"सरदार पटेल की जीत!" जूनागढ़ में सरदार की उपस्थिति के बीच स्वतंत्रता उत्सव, 13 नवंबर 1947

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हैदराबाद

हैदराबाद के निज़ाम मीर उस्मान अली खान बहादुर ने स्वतंत्रता के लिए मोहलत पाने के उद्देश्य से 29 नवंबर 1947 को एक वर्ष के लिए यथास्थिति बनाए रखने के एक समझौते (जो समझौता 15 अगस्त, 1947 से पहले ब्रिटिश साम्राज्य और निज़ाम के बीच मौजूद था) पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते से उम्मीद थी कि सद्भावना का माहौल बनेगा। लेकिन दूसरी तरफ निजाम ने कई नियमों का उल्लंघन किया। साथ ही, लोगों को मजलिस-ए-इत्तेहाद मुसल्मीन नामक संगठन के हथियारबंद रजाकारों से प्रताड़ित करवाया गया। भारत सरकार ने सौहार्द्रपूर्ण ढंग से मामले को सुलझाने के कई प्रयास किए, लेकिन सारे प्रयास असफल रहे। अंत में, 13 सितंबर 1948 को निजाम के खिलाफ 'ऑपरेशन पोलो' नामक सैन्य अभियान शुरू किया गया, जो बमुश्किल 108 घंटे चला और इसके परिणामस्वरूप हैदराबाद रियासत का भारतीय संघ में विलय हो गया।

भारतीय सेना के ब्रिटिश कमांडर-इन-चीफ जनरल बुचर के बारे में के.एम. मुंशी लिखते हैं:
"वह पूरे समय हिचक रहा था। उसने हैदराबाद की सेना की क्षमता को अधिक आंका, अपने सैनिकों की क्षमता को कम करके आंका, और वह आंतरिक कानून और व्यवस्था की समस्याओं से निपटने की सरदार की क्षमता के बारे में नहीं जानता था। अधिकांश अंग्रेजों की तरह, वह यह नहीं समझ पाया था कि भारत के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करने वाले रजाकार के खतरे को खत्म करने के लिए कोई भी कीमत ज्यादा नहीं थी।"

'पटेल वह व्यक्ति थे, जिन्होंने अपनी निर्णय क्षमता से हैदराबाद के गंभीर संकट का समाधान किया। हैदराबाद, भारतीय प्रायद्वीप के मध्य में 80,000 वर्ग मील में फैला एक राज्य था, जो उस समय एक विवेकहीन अल्पसंख्यक की गिरफ्त में था, जिसका उद्देश्य भारत से अलग होना था। यदि दांव सफल हो जाता, तो भारत एक राजनीतिक इकाई के रूप में शायद नहीं बच पाता। इस स्थिति में एक लौहपुरुष की जरूरत थी, जो सख्त कार्रवाई से नहीं कतराए और भारत के पास उस महत्वपूर्ण समय में, सरदार के रूप में वह व्यक्ति था।

-डब्ल्यू गॉर्डन ग्राहम

Indian Express

Nizam Smuggling Arms From Britain

HOW IT IS BEING DONE

इंडियन एक्सप्रेस,
5 नवंबर 1947

Hyderabad Factory Turns Out 50 Rifles A Day

Small-arms Production at Two More Places in the State

RESISTANCE TO NIZAM INCREASES

इंडियन एक्सप्रेस, 20 नवंबर 1947

Indo-Mercantile Bank Limited.

A SCHEDULED BANK

Indian Express

Nizam's Police Open Fire on Procession

7 Villagers Killed on the Spot

Wallace Predicts War Within 15 Years

Two Hyderabad Policemen Arrested

इंडियन एक्सप्रेस, 25 नवंबर 1947

नई दिल्ली
6 अक्टूबर

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

कृपया इंग्लैंड से प्राप्त एक पत्र से उद्धृत संलग्न संदर्भ देखें। इस तरह की खबरें विभिन्न स्रोतों से मेरे पास आ रही हैं। आपको यह भी याद होगा कि निज़ाम चेकोस्लोवाकिया से हथियार प्राप्त करने के लगातार प्रयास कर रहा था।

2. मुझे लगता है कि अब समय आ गया है कि हम बिना किसी शर्त के ब्रिटिश सरकार से कहें कि ब्रिटेन से निजाम को हथियारों की आपूर्ति को हमारे द्वारा सबसे गंभीर मामला माना जाएगा।और हम उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए कहें कि इस मामले में अत्यधिक सावधानी बरतें तथा सुनिश्चित करें कि ऐसी कोई आपूर्ति न हो। हमारी सहमति के बिना निज़ाम की सरकार को इस प्रकार की कोई सहायता नहीं दी जाए।

आपका,
वल्लभभाई पटेल

सरदार पटेल अपने सलाहकारों के साथ हैदराबाद समस्या पर चर्चा करते हुए [बायें से दायें] मेजर जनरल जे.एन. चौधरी, एम.के. वेलोडी, [आई.सी.एस.], एन.बी. बुच, [आई.सी.एस.] वी. शंकर [आई.सी.एस.]

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हैदराबाद पुलिस कार्रवाई 'ऑपरेशन पोलो'

सितंबर 1948 में 'ऑपरेशन पोलो' नाम से हैदराबाद में पुलिस कार्रवाई हुई, जिसमें भारतीय सशस्त्र बलों ने हैदराबाद राज्य में प्रवेश किया और राज्य को भारतीय संघ में शामिल किया।

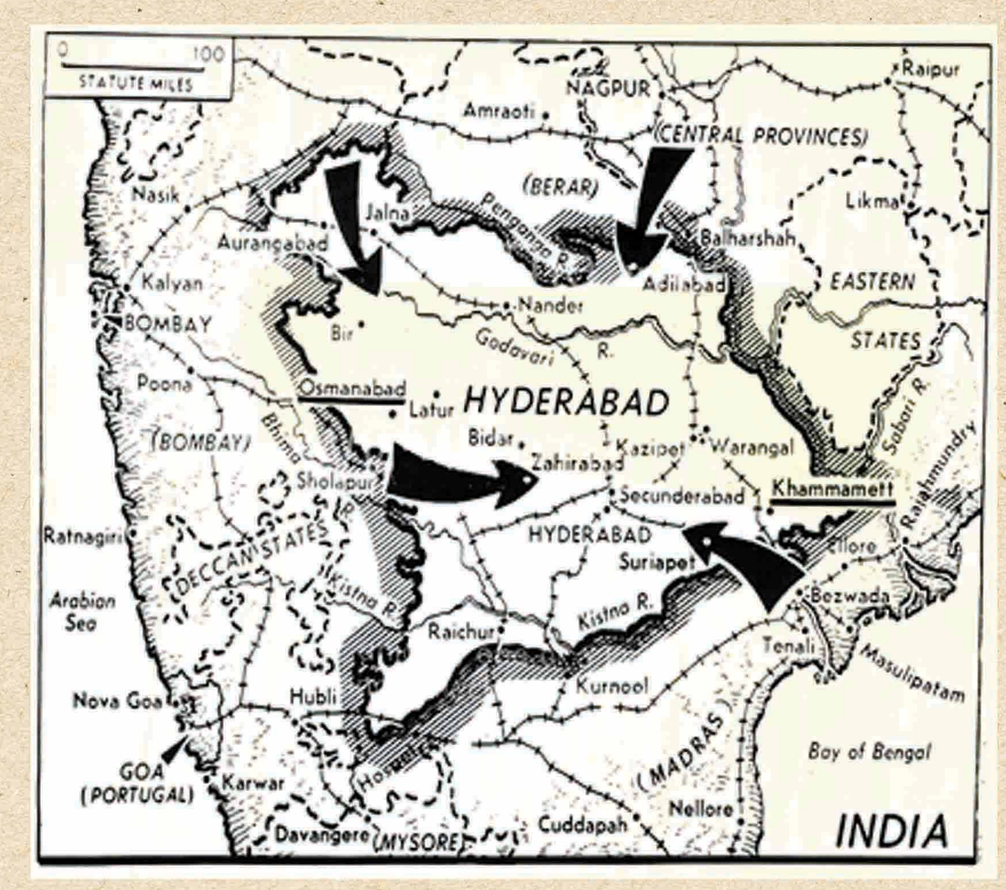

ऑपरेशन पोलो, 1948 के दौरान भारतीय सेना द्वारा संचालित गतिविधियां

ऑपरेशन पोलो का एक दृश्य, सितंबर 1948

SAREES, SUITINGS, SILKS &
EASTERN STORES,
MADRAS

Indian Express

THE TOURIST HOMES, LTD.

TROOPS MARCH INTO HYDERABAD

THREE-PRONGED DRIVE ON SECUNDERABAD

30-mile Advance From Sholapur | Balharsha On C.P. Border Falls | Munagala Troops Fan Out

GOOD PROGRESS DESPITE OPPOSITION

NEW DELHI, Sept. 13.

Indian Troops, under the command of Lt.-Gen. Maharaj Shri Rajendra Sinhji, G.O.C.-in-Chief, Southern Command, marched into Hyderabad from three directions at 4 a.m. today. According to latest reports, the going is good, despite opposition.

"Going Is Good"

The Nizam Govt. Has Broken Down: Duty To Restore Order

A.R.P. IN HYDERABAD

THE ORDER

Our Planes In Action

FRIENDLY MISSION OF OUR TROOPS

Commander's Proclamation To State People

NIZAM MAY FLEE

Cotton In State, With Planes

Bajpai Not Going To Paris Now

इंडियन एक्सप्रेस, 14 सितंबर 1947

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

रजाकार रैली। कासिम रजवी आगे की पंक्ति में बाएं से तीसरे स्थान पर। रजाकार, निजाम मीर उस्मान अली खान के शासन का समर्थन करने के लिए कासिम रजवी द्वारा आयोजित एक निजी मिलिशिया थी।

भारतीय सेना के टैंक

भारतीय सेना के वाहन

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय सेना की जय-जयकार करती भीड़

हैदराबाद राज्य के अंतिम प्रधानमंत्री मीर लाइक अली

हथियार और गोला बारूद

हैदराबाद राज्य के रजाकार प्रमुख सैयद कासिम रज़वी

हैदराबाद स्टेट फोर्सेज (आर) के कमांडर-इन-चीफ मेजर जनरल सैयद अहमद अल अड्रोस लेफ्टिनेंट जनरल महाराज कुमार श्री राजेंद्रसिंह जी से हाथ मिलाते हुए

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

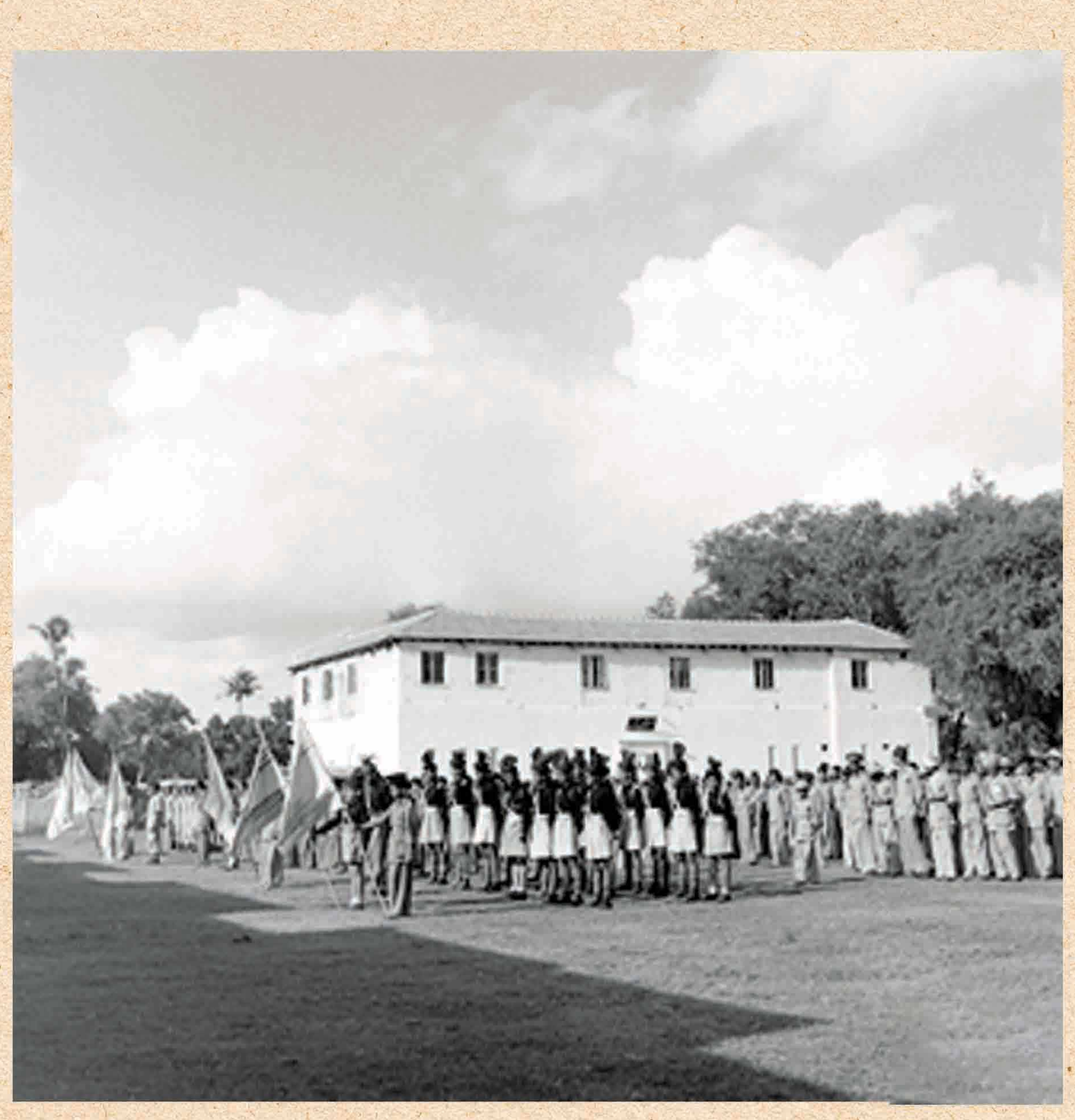

ऑपरेशन पोलो, हैदराबाद में पुलिस कार्रवाई

मेजर जनरल जोयंतो नाथ चौधरी हैदराबाद स्टेट फोर्सेज के कमांडर-इन-चीफ मेजर जनरल सैयद अहमद अल अड्रोस के साथ बात करते हुए

रजाकार, निजाम मीर उस्मान अली खान के शासन का समर्थन करने के लिए कासिम रजवी द्वारा आयोजित एक निजी मिलिशिया

हैदराबाद राज्य बल

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

ऑपरेशन पोलो के दौरान हैदराबाद पुलिस आयुक्त
नवाब दीन यार जंग बहादुर

भारतीय सैनिक

HYDERABAD FORCES SURRENDER TODAY

THE NIZAM TAKES OVER ADMINISTRATION: LAIK ALI CABINET RESIGNS

Anxiety To Open "New Chapter Of Friendliness With India"

RAZAKARS BANNED: ORDERS ON STATE CONGRESSMEN CANCELLED

From Our Special Representative

NEW DELHI, September 17

HYDERABAD'S SURRENDER, FIVE DAYS AFTER INDIAN FORCES HAD MARCHED INTO THE STATE, WAS ANNOUNCED BY THE NIZAM THIS EVENING.

Entry Into Hyderabad

PRINCE OF BERAR TO GREAT TROOPS

COUNT BERNADOTTE ASSASSINATED

Outrage In Jerusalem: Hand Of Stern Gang Suspected

EMERGENCY SESSION OF U. N. COUNCIL

INDIA'S FOOD

SECUNDERABAD TO BE OCCUPIED TODAY

18 सितंबर 1947

PRINCE WATCH CO.

The Deccan Chronicle

LARGEST SELLING ENGLISH JOURNAL IN THE STATE

SECUNDERABAD, SATURDAY, SEPTEMBER 18, 1948.

Rose's GLUCOSE BISCUITS

ROSE BISCUIT WORKS

H. E. H. THE NIZAM ORDERS TROOPS TO "CEASE FIRE"

FIVE DAYS' RESISTANCE COLLAPSES BEFORE INDIAN ARMY'S FIVE PRONGED DRIVE

RAZAKARS DISBANDED-TROOPS TO OCCUPY SEC'BAD AND BOLARUM

Appeal To Security Council Not To Be Pressed; Swamiji Released

COMMITTEE OF ADMINISTRATION TO CARRY ON TILL REGULAR MINISTRY COMES INTO BEING

HYDERABAD, Sept. 17.

His Exalted Highness the Nizam, by his timely intervention, came to the rescue of his people. In a special broadcast to the people of Hyderabad, His Exalted Highness graciously stressed the following points:

1. He has taken over the Administration into his personal hands.
2. Hyderabad Troops have been ordered to "Cease Fire"
3. Razakars have been disbanded.
4. An Administrative Council headed by H. H. Prince of Berar has been formed.
5. Sir Mirza Ismail and others are invited for consultations.
6. Swami Ramanand Tirtha has been ordered to be released.
7. An agreement with India to maintain "integrated harmony" is to be secured.
8. Appeal before the Security Council is not to be pressed.
9. A tribute has been paid to Mr. Munshi's help.

RELIEF IN LONDON ON HYDERABAD "CEASE FIRE"

British Government Unwilling To Discuss

"RESCUING PEOPLE FROM TWELVE MONTHS' NIGHTMARE"

INDIAN TROOPS ENTER IN A SPIRIT OF FRIENDLINESS

No Discrimination Based On Religion Or Race

MR. K. M. MUNSHI COMMENDS H.E.H'S RESOLVE FOR "INTEGRATED HARMONY" WITH INDIA

HYDERABAD, Sept. 17.

Speaking after His Exalted Highness, Mr. K. M. Munshi, India's Agent General at Hyderabad appealed to the people of Hyderabad. In his broadcast he mentioned the following points:

1. Hyderabad's lot is with India, and they cannot be parted.
2. India is a secular State and there would be no discrimination between Hindus and Muslims.
3. Troops enter Hyderabad in a spirit of friendliness.
4. Indian Army also belongs to the people of Hyderabad.
5. The Army has come to rescue the people from the nightmare of the past twelve months.
6. He Appealed for mutual trust and goodwill.

डेक्कन क्रॉनिकल, 18 सितंबर 1947

मेजर जनरल सैयद अहमद अल एड्रोस (दाईं ओर) सिकंदराबाद में मेजर जनरल (बाद में जनरल और सेना प्रमुख) जोयंतो नाथ चौधरी के समक्ष हैदराबाद राज्य बलों के आत्मसमर्पण की पेशकश करते हुए

21 सितंबर, 1948 को सिकंदराबाद पहुंचने के तुरंत बाद भारतीय संघ के अधिकारियों के साथ के. एम. मुंशी और स्वामी रामानंद तीर्थ की एक समूह तस्वीर।

सरदार पटेल मेजर जनरल जे.एन. चौधरी, हैदराबाद के निज़ाम और वी. शंकर के साथ

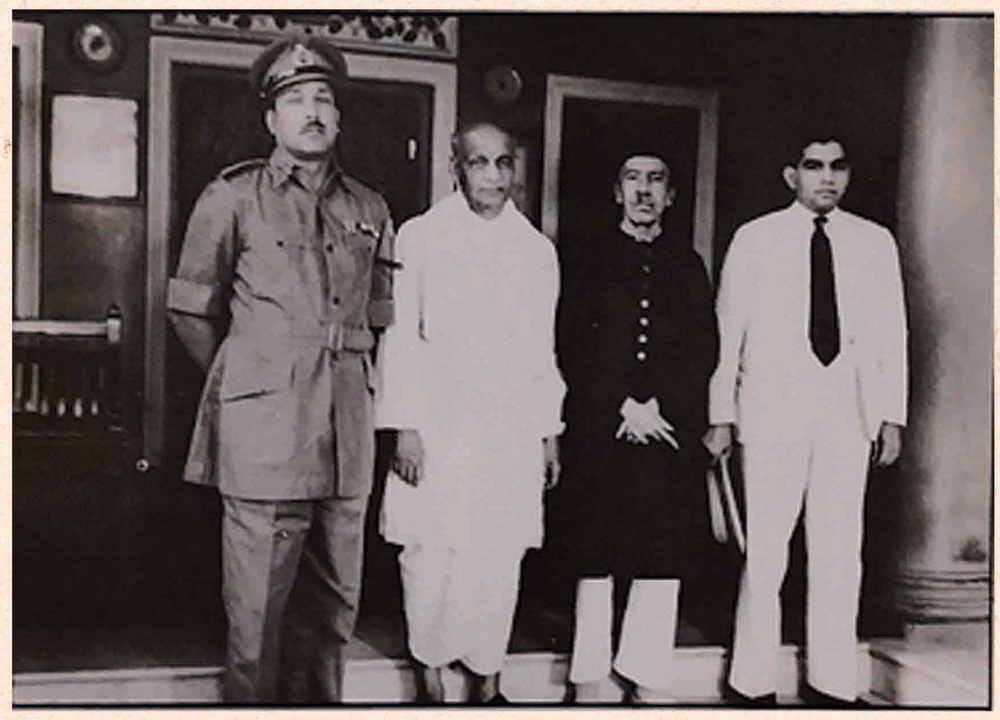

सरदार पटेल हैदराबाद के निंजाम के साथ

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पीआईबी, 30 जून 1948

POLICE ACTION

ENGAGED IN ACTUAL OPERATION:

1 Gwalior Lancers	(Gwalior)
Mysore Lancers	(Mysore)
Mewar Infantry	(Mewar)
4 Gwalior Infantry	(Gwalior)
Rajaram Rifles	(Kolhapur)
1 Mysore Infantry	(Mysore)

INDIRECTLY ENGAGED:

1 Baroda Infantry	(Baroda)
1 Travancore Infantry	(Travancore)
2 Jodhpur Infantry	(Jodhpur)

I hope this information is what you require.

R. K. Birendra Singh Lt.-Col.
for Major-General
MA-in-C, ISF

PRESS INFORMATION BUREAU
GOVERNMENT OF INDIA

1. Name of paper — Free Press Journal.
2. Published at — Bombay.
3. Dated — 30-6-48

HANDS OFF HYDERABAD: PATEL WARNS CHURCHILL

MISCHIEVOUS ATTACK WILL COST BRITAIN INDIA'S GOODWILL

NEW DELHI, June 29.

Sardar Vallabhbhai Patel, Deputy Prime Minister of India, has denounced Mr. Churchill and his Conservative supporters for their belated attempt to bolster up the cause of their "faithful ally" the Nizam of Hyderabad.

फरवरी 1949 में हैदराबाद की यात्रा के दौरान एक चाय पार्टी में मध्य। सरदार के साथ मेजर जनरल चौधरी, (मिलिट्री गवर्नर,) श्रीमती चौधरी, श्री वी.पी. मेनन और बरार के राजकुमार

"ACTION" AGAINST HYDERABAD IMMINENT

PATEL'S ANNOUNCEMENT IN PARLIAMENT

(From Our Special Correspondent)

NEW DELHI, Tuesday.—Sardar Patel, Deputy Prime Minister, told Parliament today that adequate action would be taken against Hyderabad for effective breaches of the Standstill Agreement. He added that that action was now under the active consideration of the Government.

Sardar Patel was replying to supplementaries on a short-notice question on Hyderabad.

Patel's Warning To Hyderabad

GOVT. FULLY ALIVE TO HYDERABAD SITUATION

PATEL EXPLAINS INDIA'S STAND: MESSAGE TO A.-I.C.C.

BOMBAY, April 21.—Sardar Patel in his message to the A.-I.C.C. made a particular reference to the situation in Hyderabad. He assured the Committee that the Government were fully alive to the situation that had developed and the risks involved and declared that they would accept "nothing short of a satisfactory and honourable solution."

हिंदुस्तान टाइम्स, 26 जून 1948

Sardar Patel Attends Prayer Meeting

नेशनल कॉल, 31 अगस्त 1948

1949 में फतेह मैदान में जनता को संबोधित करते हुए पटेल ने हैदराबाद के लोगों से कहाः
'वास्तव में अब, भारत का एक हिस्सा- भारत का दिल... भारत दो भागों में बंट गया है। जो लोग द्विराष्ट्र सिद्धांत के लिए आंदोलन शुरू करने के जिम्मेदार थे, उन्हें वह मिल गया, जो वे चाहते थे। लेकिन देश में अभी भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो उन ख्यालों को संजोये हुए हैं। उनसे मैं कहूंगा कि उनका सही स्थान दूसरे देश में है। ऐसे लोगों के लिए पाकिस्तान जाना बेहतर है, क्योंकि उनका भगवान वहां है... मैं ऐसे लोगों को चेतावनी देता हूं कि अगर वे यह सपना भी देखते हैं कि उन्हें बाहर से कोई सहायता मिल सकती है, या दूसरे लोग हैदराबाद के मामलों में हस्तक्षेप कर सकते हैं, वे भ्रम में हैं। हैदराबाद का मामला एक आंतरिक मसला है, जिसका फैसला जनता खुद करेगी।'

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अंतिम यात्रा

सरदार पटेल ने 15 दिसंबर (शुक्रवार) 1950 को सुबह 9:37 बजे बिरला हाउस, बॉम्बे में अंतिम सांस ली। अंतिम यात्रा के जुलूस में पश्चिम और मध्य बॉम्बे में श्मशान घाट तक शोकग्रस्त मानवता का एक ज्वार उमड़ा। ऐतिहासिक अंतिम यात्रा शाम 7:20 बजे सोनापुर श्मशान घाट पर पहुंची।

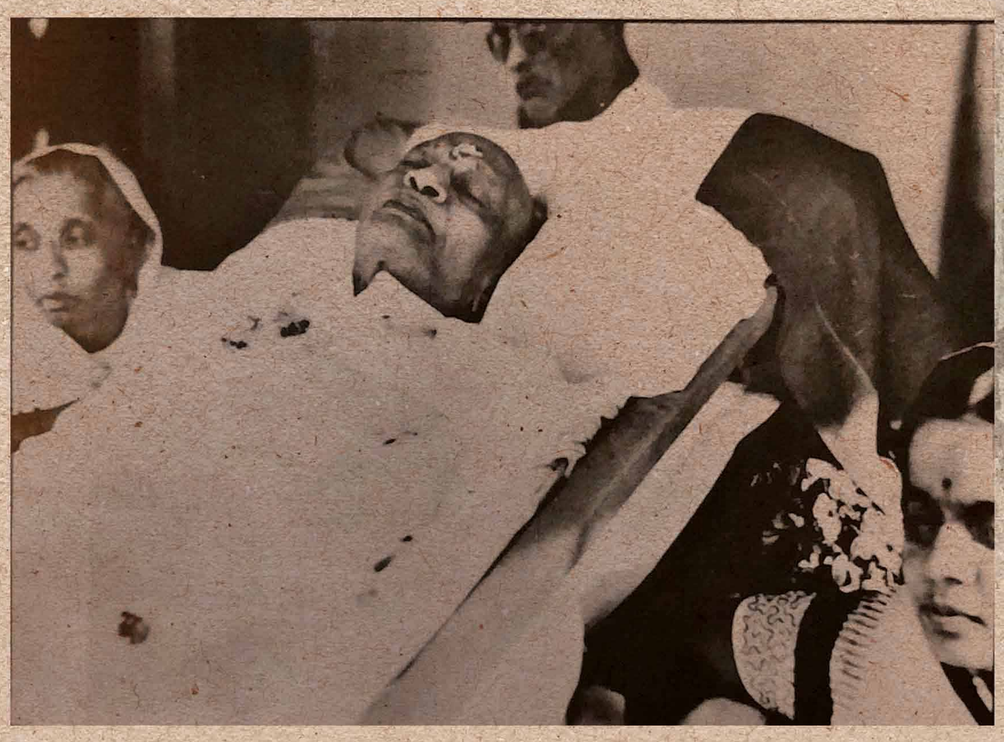

सरदार पटेल चिर निद्रा में

बंबई में सरदार पटेल को अंतिम विदाई देने उमड़ी शोकाकुल लोगों की भारी भीड़

अंतिम यात्रा का वायुयान से लिया गया चित्र

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

पूज्य सरदार साहब के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख हुआ, जो इतने वर्षों से हमारे प्रकाशस्तंभ रहे हैं। गुजरात और सौराष्ट्र को इससे अपूरणीय क्षति होगी।

यू.एन. ढेबर और सौराष्ट्र मंत्रिमंडल के उनके सहयोगी, 15.12.1950

सरदार के दुखद निधन ने भारत को सुदृढ़ और मजबूत करने वाले एक महान कारक से वंचित कर दिया है, उनकी उपलब्धियां इतिहास का हिस्सा हैं।

सर सी.पी. रामास्वामी अय्यर, 15.12.1950

भारत ने एक महान नेता और संयुक्त राष्ट्र ने एक मजबूत दोस्त खो दिया है, जो हमेशा अपने आदर्शों और उद्देश्यों के लिए खड़ा रहा।

ट्रिगवी ली
महासचिव, संयुक्त राष्ट्र संघ, 15.12.1950

पूरा देश आपके साथ शोकग्रस्त है। नरेंद्र देव, 15.12.1950

बहुत बड़ी राष्ट्रीय हानि।
एम.एस. गोलवलकर, 15.12.1950

उनके निधन से कश्मीर ने एक दृढ़ मित्र खो दिया है।
बख्शी गुलाम मोहम्मद, 15.12.1950

मैं अपनी और भारतीय सेना के सभी रैंकों की ओर से आपकी अपूरणीय क्षति के लिए अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट करता हूं। सेना के रूप में हमारे कल्याण में आपके पिता की सक्रिय रुचि हमेशा बहुत गर्व और प्रेरणा का विषय रही है। इसलिए उनके असामयिक निधन से हमारे लिए शून्यता पैदा हो गई है, जिसे कुछ लोग ही महसूस कर सकते हैं।

कमांडर-इन-चीफ, भारतीय वायु सेना, 15.12.1950

बापू के निधन के बाद, भारत को सबसे बड़ी क्षति।

जय प्रकाश, प्रभावती

15.12.1950

प्रयाग में सरदार की अस्थियां प्राप्त करते हुए राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, दायीं ओर जी.बी. पंत।